पाप में पकड़ी जाऊंगी और परमेश्वर को क्या मुह दिखाऊं
गी हातिम नें कहा कि तू उस अपने आशिक़ को बुलवा के
अपना मुह दिखा और उसका तू देख कि उसका मनोर्थ यही
है अलगन परी ने कहा कि मैंने यह बात मानी इसबात के
सुनतेही हातिम ने चाहा कि जाके उसे ले आऊं तब अलग
न परी ने कहा कि तुम क्यों क्लेश करते हो मैं परीज़ादों को भे
ज उसे बुलवाये लेती हूं फिरि परीज़ादों से कहा कि तुम उ
स पहाड़ की ओर जाओ वहां एक मनुष्य वृक्ष के नीचे पत्थ
र की सिलपर आंखे बंद किये खड़ा है और ठंढी सास ले
ताहै उस्से कहो कि हातिम तेरी प्यारी के पास जा पहुंचा और
तेरा सम्पूर्ण वृतांत बरणन किया इसलिये अलगन परी
ने तुझे बुलाया है वे परीज़ाद एक पल में वहां जा पहुंचे औ
र यह समाचार उस्से कहा कि वह इस बात के सुनतेही हा
तिम के साहस पर धन्य धन्य करके उनके साथ होलिया
और एक ही दिन में वहां पहुंच गया बादशाहज़ादी ने उसे
अपने पास बिठालिया वह उसे देखतेही मूर्छित हो धरती
पर गिर पड़ा तब अलगन परी ने अपने हाथ से उस पर
गुलाब छिड़का जब वह चेत में आया तब अलगन परी ने
प्यार से कहा कि अब मुझे जी भर के देख ले निदान दिन भ
र ऐसेही बीता सांझ समय उसने परियों से कहा कि नाच
राग की सभा बनाओ इसबात के सुनतेही वे नाचने गाने ल
गीं हातिम और वह मनुष्य भी देख रहे थे पर अलगन
परी ने उस मनुष्य की ओर मनन लगाया हातिम ने [illegible] यह
दसा देख उस मनुष्य से कहा कि तू इस मोहर को [illegible] पानी में
रगड़ के अपने मुंह में ले और उसके पानी की [illegible] अलगन परी के
कुल्ले करदे फिर यहां आके चुप के से बैठ र[illegible] वह उसका
[illegible]

वे सहसा दौड़ पड़ी कि तुझ को पानी की डिलिया से क्या काम है उसने कहा बहुत प्यासा हूं क्या करूं उन्होंने उसे पानी पिलादिया वह वहीं फिरि आबैठा हातिम ने जब देखा कि वह अपना काम कर चुका तब हातिम ने बादशाहज़ादी से कहा कि उसे बड़ी गरमी लगी है थोड़ा सा शरबत पिलाओ और उसकी प्यास बुझाओ उसने कहा कि शीघ्र शरबत बना लाओ हातिम आपही उठ के अपने हाथ से शरबत बना बादशाहज़ादी के सामने लाया उसने कहा थोड़ा थोड़ा सब पियें हातिम बोला कि पहले आप पीलीजिये फिर सब पियेंगे बादशाहज़ादी ने हातिम के हाथ से प्याला ले मुंह से लगा दो चार घूंट के पीतेही उस अपने आशिक़ पर बावली हो गई हातिम ने देखा कि उसकी दसा कुछ और है धीरे से कहा कि जो उस अध मरे बिरह मारे पर दया करो तो आपकी बड़ी कृपा है उसने मुसक्याके यह पंदा अरी पवन सब लाई तोही कहने लगी कि मैं नहीं जानती कि यह आग किस की लगाई है अब उसके बिरह की पीर मुझ से सही नहीं जाती और उसके बिन मिले क्षण भर भी नहीं रहाजाता तेरा कहा माना और उसे अंगीकार किया पर माता पिता की इच्छा बिन यह काम नहीं करसकती यह कह के लज्जा परवत की ओर गई और महल में जा माता को प्रणाम कर लाज से सिर झुका चुप कीही रही माने कहा कि इतना शीघ्र क्यों आई अभी तो चालीस दिन नहीं बीते तब उसकी सहेलियों ने बिनती की कि एक मनुष्य बादशाहज़ादी के मन भया है और उसने भी इन की चाह में बरसों से अपना चैन सुख गंमाया अब यहां आ पहुंचा है इसलिये चाहती है कि उसके साथ गांठ जोड़े पर आपकी आज्ञा बिन यह काम नहीं करसकती यह सु

नतेही वह अपने पति के पास गई और कहने लगी कि तुम्हा
री बेटी चाहती हैं कि एक मनुष्य के साथ अपना ब्याह करै
उसने कहा कि जो उसकी इच्छा है सो उसे फलै मैं प्रसन्न
हूं निदान अलगन परी ने हातिम और उस मनुष्य को
बाग़ से बुला भेजा उसकी मा उन्हें देख बहुत प्रसन्न हुई औ
र अपने पति से उनकी बड़ी सराहना की उसने उसी समय
ब्याह की तयारी कर बड़ी धूम धाम और अपनी कुलरीति
से अपनी बेटी उसे ब्याह दी दोनों दूलह दुलहिन परस्प
र आनंद पूर्बक मिल के भोग बिलास का प्राचीन मनोरथ पूरा
किया और हातिम का भला मनाने लगे सात दिन बीते हाति
म ने उनसे बिदा मांगी अलगन परी ने पूछा कि अब तुम्हा
रा मनोरथ कहां जाने का है उसने कहा कि अहमर परवत का
क्योंकि वहां मुझे कुछ आवश्यक काम है परी ने कहा कि तुम
चिंता मत करो मैं एक दिन में तुम्हें वहां पहुंचा देती हूं यह
कहके उसने अपने कई परीज़ादों से कहा कि तुम हातिम
को तखत पर बिठा के वहां पहुंचादो वे उसे जड़ाऊ तखत पर
बिठा के ले उड़े और रात के समय वहां पहुंचे हातिम ने उन
से कहा कि तुम मुझे यहां छोड़ो और तुम बिदा हो हातिम के
कहने से वे सब बिदा हुये हातिम उसी पुकार की ओर चल
के उसी शख़्स के पास जा पहुंचा जहां से वह शब्द आता था
वहां जाके देखा कि एक बूढ़ मनुष्य लोहे के पिंजरे में लटक
ता है अचंभे मे हो एक क्षण खड़ा रह के पूछा कि अरे बूढ़े
बाबा तुम्हारे मुह से घड़ी घड़ी यह शब्द क्यों निकलता है।
और वह कौन है जिसने तुझे इस पिंजरे में बंद करके लट
का दिया है यह सुन वह उसास ले कराह के बोला कि मेरा वृ
त्तांत कुछ न पूछ जो पूछता है तो मेरी सहाय कर इस बात
पर मैं तुझसे कहता हूं हातिम ने कहा कि मैंने माना उसने

कहा कि मैं अहमद सौदागर हूं जिस समय मैं उत्पन्न हुआ मेरे बाप ने यह देश मेरे नाम से बसाया जब मैं बड़ा हुआ मेरा बाप मुझे इस शहर में छोड़ किसी देश को सौदागरी के लिये गया जो धन रत्न सम्पति मेरे बापने मुझे दी थी उसे मैंने थोड़े ही दिन में वृथा उड़ादिया और दरिद्री होगया। और मेरा बाप उसी देश में मरगया गड़ा गड़ाया धन कुछ मेरे हाथ लगा कुछ दिन बीत जाने पर बाज़ार में एक मनुष्य को यह कहते देखा कि जिसका धन और सम्पदा खोई गई हो वा धरती में गाड़ के भूलगया हो मैं अपनी विद्यासे निकाल देता हूं पर जो मुझे चौथाई देना करै मैंने उसकी बात मान ली और अपने घर में लाके जगह दिखाई उसने कई जगह की मिट्टी उठा के और संघ के फेंक दी फिर एक कुये को खुदवाया उसमें असंख्य धन रत्न निकला मैं चौथाई देने मे छल बल करके अपनी बात से फिरगया थोड़ा सा उठा के उसके आगे रखदिया उसने कहा कि मैं वहीं अपना चौथाई लूंगा इस बात पर मैंने क्रोध कर उसे थप्पड़ों से मार बाहिर निकालदिया वह रोता पीटता चलागया कई दिन पीछे फिर आके मुझ से मित्रता करके एक दिन कहने लगा कि जो कुछ धरती में गड़ा है मुझे सब देख पड़ता है मैंने उससे पूछा कि यह क्या विद्या है मैं भी किसी भांति सीख सकता हूं उसने कहा कि बहुत सहज है वह एक अंजन की युक्ति है उसे बना के जो कोई आंखों में लगावे जितना धन धरती में गड़ा हो देखने लगे मैंने कहा जो तू मेरी आंखों में ऐसा अंजन लगादे तो जो द्रव्य मुझे देख पड़े उसमें आधा तेरा उसने कहा बहुत अच्छा तू मेरे साथ जंगल में चल मैं उसके साथ यहां आया इस पिंजरे को देख अचंभे मे हो पूछने लगा कि यह पिंजरा किसका है उसने कहा मैं नहीं जानता यह कहे

वह इस वृक्ष के नीचे बैठगया और अपने पास से एक अंज
न की डिबिया निकाल एक सलाई मेरी आंखों में फेरदी मैं
उसी क्षण अंधा होगया और उस्से कहा कि अरे प्यारे तू ने
यह क्या किया कि मुझे अंधा किया वह बोला कि झूठे और प्र
तिज्ञा भंग करने वालों का यही दंड है जो आंखों की दृष्टि चा
हता है तो इस पिंजरे में बैठ रह और यह बात कहा कर कि
किसी से बदी न कर जो करेगा तो वहीं पावेगा मैंने फिर पू
छा कि मेरी आंखों की कुछ औषधि भी है उसने कहा कि ब
हुत दिन बीते एक परोपकारी मनुष्य इधर आवेगा तू उस्से
अपना वृत्तांत कहना वह कहीं से नूर रेज़ घास लाके उसका
पानी तेरी आंखों में टपकावेगा तब तेरी आंखें जैसी थीं वै
सीं ही हो जावेंगी उसी आशा पर इस पिंजरे में बैठ उसकी
बाट देखते देखते तीस बर्ष बीते कभी कभी जो उखताके
इस्से निकलता हूं तो सारी देह हड्डी से मास तक और मा
स से ले खाल तक ऐसी दुखती है कि व्याकुल हो फिर इ
सी में आ बैठता हूं और ठंडी उसास ले यही कहा करता हूं
ऐसेही बहुत आये और पूछ पूछ के चले गये पर किसी
ने मेरी पीर का उपाय न किया हातिम ने कहा कि तू धीर्य
रख यह काम मैं करूंगा इतने में वे परीज़ाद जो हातिम-
को यहां पहुंचा के लक़ा पर चन को गये थे अलगन परीउ
न पर झुंझला के कहने लगी कि जब हातिम वह काम कर
चुकता तब उसे उसके घर पहुंचा के तुम यहां आते अब तु
म्हारी कुशल इसी में है कि उसे उसके घर पहुंचा के यहां
आओ नहीं तो सब कुछ तुम्हारे साथ करूंगी वे इस बात
के सुनतेही दौड़े और हातिम के पास आगये और जो उन
पर बीती थी सब वरणन करके पूछा कि अब आपका मनो
र्थ किधर आने का है उसने कहा कि जहां नूर रेज़ घास है व

हों जाया चाहता हूं वे बोले कि हम तुम्हें उस जंगल के पास प हुचा देंगे और दूर से पता भी बता देंगे पर वहां न जावेंगे जो तुम जीते फिरोगे तो तुम्हारे शहर में तुम्हें पहुंचा देंगे नहीं तो जो तुम पर बीतेगी सो बादशाहज़ादी से जा सुनावेंगे हा तिम ने पूछा इसका क्या कारण उन्होंने कहा कि जिस समय वह घास धरती से निकलती है उस समय बन के फूल सब दीपक समान प्रकाशित होजाते हैं और सांप बिच्छू आदि क मनुष्य दुख दायी और प्राण घातक जीव पशु पक्षी कीट उसके आस पास घिर आते हैं इसलिये वहां कोई नहीं जा सकता हातिम ने कहा कि देखिये क्या भाग्य में है तब एक परीज़ाद ने हातिम को कंधे पर बिठा लिया और सब सा थ होलिये सातवें दिन उस बन के समीप जा पहुंचे तो ए क बड़ी लम्बी चौड़ी जगह दृष्टि पड़ी हातिम ने कहा कि व ह घास कहां है उन्होंने कहा कि उसके उगने का समय आ पहुंचा है सो चार ही दिन में निकलेगी हातिम और वे परीज़ाद कई दिन उस जंगल में रहे भांति भांति के मेवे खा याकिये कि एक दिन वह घास धरती से निकली जितने फू ल थे दीपक समान प्रकाशित होगये और सारा बन सुगं ध से महक गया सब भांति के जीव उसके आस पास इक है हो घेर के खड़े हुये हातिम ने परीज़ादों से कहा कि तुम य हीं रहो मैं परमेश्वर के भरोसे पर जाता हूं आगे जो उसकी इच्छा यह कह वह जिन्नों के बादशाह का दिया हुआ मोहरा मुंह में रख उस घास के पास जा दो तीन उसकी पत्ती और कई पत्तियां फूलों की ले कुशल से फिर आया परीज़ाद देख के अचंभे में रहगये कि यह ऐसा अद्भुत मनुष्य है कि जि सके समान देखा सुना नहीं फिर हातिम को उसी भांति उ स वृद्ध मनुष्य के पास पहुंचा दिया वह उसी दशा में पड़ा

था इतने में हातिम ने पुकार के कहा कि बूंद वावा मैं वह घास
ले आया उसने कहा कि धन्य तुझे अब तूही अपने हाथों से
मल के दो तीन बूंद मेरी आखों में टपका दे हातिम ने वैसा
ही किया पहिले तो आखें उबल आईं फिरि नीली होगईं
निदान पानी सूखगया आखें कटोरा सी खुलगईं वह हा
तिम के पैरों पर गिरिपडा उसने उसे गले लगाया और क
हा कि भाई अब क्या कहता है मैंने परमेश्वर के मार्ग में सि
र दिया है जो किसी का काम मेरे हाथ से निकलता है उसे
मैं अपना अहो भाग्य समझता हूं उसने कहा कि मेरे घर में
बहुतसा धन रत्न है वहां चल के जितना तुझे चाहिये लेले
हातिम ने कहा कि मुझे धन रत्न नहीं चाहिये परमेश्वर की
कृपा से मेरे ही घर में बहुत है उसी को धर्म कार्य में उठाता हूं
तेरा धन लेके क्या करूं उससे बिदा हो परीज़ादों के कंधे पर
चढ दस दिन में शाहाबाद आपहुंचा तब परीजादों ने क
हा कि आप अपनी मोहर से एक रसीद लिख दीजिये कि हम
उसे बाद शाहज़ादी को दें जिस में उनके मन को संतोष हो
हातिम ने रसीद अपने वृतांत समेत लिख के उन्हें दी वे उ
धर उडे और हातिम शहर में आके कारवां सराय में गया
और मुनीर शामी से मिल के बहुत प्रसन्न हुआ दो चार
घडी पीछे दोनों साथ होके हुस्नबानू के घर आये वह बहु
त अच्छे मकान में सुथरे परदे लगा के बैठी और उन को
जडाऊ चौकियों पर बडे आदर सन्मान से बाहर बिठाके
वृतांत पूछा हातिम ने आदि से अंत तक बरणन किया
हुस्नबानू ने उनके आगे भांति भांति के खाने और मेवे चु
नवा दिये वे प्रसन्नता पूर्वक भोजन कर रात को वहीं रहे
प्रातःकाल हातिम ने पूछा कि हुस्नबानू अब कौनसी तीस
री बात है उसने कहा कि एक मनुष्य कहता है कि सच बोल

ने वाले को सदा सुख है वह क्या सच बोला और क्या सुख पाया उसके समाचार ला हातिम ने कहा कि तुम जानती हो कि वह किस ओर है वह बोली कि मैंने अपनी दाई से सुना है कि क़रम शहर में है पर यह नहीं जानती कि वह शहर किस ओर है हातिम ने कहा कि परमेश्वर इस दुर्गम को भी सुगम करेगा ॥

चौथी कहानी में इस बात के समाचार लाने का बरनन है कि एक मनुष्य कहता है कि सच बोलने वाले को सदा सुख है ॥

हातिम हुस्न बानू से बिदा हो के शहर से बाहर निकला कई दिन चल के एक परबत के पास जा पहुंचा वहां क्या देखता है कि एक बड़ा नद लोहू से भरा हुआ बड़े बेग से बहता है हातिम उसे देख चिंता कर अपने मन में कहने लगा कि मैंने कभी लाल पानी का नद नहीं देखा इसे जाना चाहिये कि यह कहां से आता है और इसके बहने का कारण क्या है यह बिचार कर उसी ओर चला इतने में एक बहुत बड़ा वृक्ष सामने से देख पड़ा तब उसके पास पहुंचा तो देखा कि उसकी डालियों में सकड़ों मनुष्यों के सिर लटकते हैं उसके नीचे एक तालाब बहुत सुढार मुंहों मुंह भरा है और उसी का पानी जंगल की ओर चला जाता है हातिम उस वृक्ष के नीचे बैठ गया तब जितने सिर उस वृक्ष में लटकते थे क़ह क़हा के हंसने लगे यह देख हातिम को अचंभा हुआ कि कटे सिर हंसते हैं और उनसे रुधिर की बूंद टपक टपक उसी तालाब में गिरते हैं और रुधिर भरा पानी हो के नद में चला जाता है इतने में उसकी दृष्टि उस सिर पर जा पड़ी जो सब सिरों से ऊपर लटकता था हातिम उसे

देखतेही मूर्छा आगई जब चेत हुआ तब अपने मन में कहने ल
गा कि इस बात का भेद बिन जाने किसी से कैसे कहूंगा अब यह
उचित है कि थोड़े दिन यहां रह के इस बात को समझ लीजिये
कि यह क्या भेद है इसी सोच में यह दिन भर रहा इतने में रात
होगई तब हातिम एक कोन में छिप के बैठ रहा सारे सिर ब
क्ष की डालियों में से कूद के तालाब में गिर पड़े उस तालाब में
एक बैठक बहुत सुघर बनी थी उस में बहुत सुथरा बिछौना बि
छाया गया और एक जड़ाऊ तखत भी रक्खा कई घड़ी पीछे अ
ति सुकुमारी परियां निकलीं उन में एक बहुत नुकीली सजीली
मनोहर चंद्र मुखी थी बड़े मान गुमान से उस तखत पर बैठ
गई हातिम ने जो सोच के देखा तो जाना कि यह वही सिर है
जो सब से ऊंचा था फिर कितनी परियां उसके आस पास कु
रसियों पर बैठगईं और कितनी हाथ बांध खड़ी होरहीं इत
ने में नाचफ़ा साज़ मिला के खड़ा हुआ और उस तखत के
सामने नांचने लगा हातिम तक लगाये देखता था मन में
कहता कि ए परमेश्वर यह क्या भेद है जब आधी रात गई
तब दस्तर खान बिछा और भांति भांति के सुथर खाने खा
ने उसपर चुनेगये फिर उस तखत पर बैठने वाली ने एक ख
वास से कहा कि खाने का एक थाल बना के उस बटोही को जो
उस कोन में बैठा है दे आवो वह वैसाही थाल बना के सिर प
र धर हातिम के पास लेगई जाके कहा कि हमारी सिरदार ने
यह तुझे भेजा है हातिम ने कहा कि तेरा और तेरी सिरदार का
क्या नाम है वह बोली कि मेरे और मेरी सिरदार के नाम से तु
झे क्या काम है भूखा है तो खाना खा हातिम बोला कि जब त
क तू अपना और अपनी सिरदार का नाम न बतावैंगी तब
तक मैं नहीं खाने का यह सुन उस खवास ने आके कहा कि
वह बटोही खाना नहीं खाता और कहता है कि जब तक तू

अपना और अपनी सरदार का नाम और इस सभा का वृ
तांत जो इस तालाब से निकली है न बतावेगी तब तक मैं खा
ना न खाऊंगा यह सुन मलिका बोली कि तू फिर जाके कह
कि पहिले तू खाना खाले पीछे बतादूंगी जब वह खाचुके
तब कहियो कि आज नहीं कल्ह वह हातिम के पास आई
और जैसा मलिका ने सिखाया था वैसाही कहि सुनाया
हातिम ने चाहा कि उसका हाथ पकड़ ले वह भाग के ता
लाब में कूद पड़ी और मलिका के पास जा खड़ी हुई सारी
रात नाच रंग होता रहा सवेरा होतेही सब तालाव में कूद
पड़ी थोड़ी विलम्ब में सब सिर पानी पर आगये और आप
से आप उरूख २ वृक्ष की डालियों में लटके और वह सि
र वैसाही ऊंचा जा लटका फिर सब सिर हंस पड़े हातिम
भी उस कोने से सिरदार के सिर पर टक टकी लगाये था औ
र मन में कहता कि जो इस भेद को पाऊं तो जैसे बने वैसे इस
सरदार के साथ अपना व्याह कर लूं हे परमेश्वर यह क्या
भेद है कि रात को जीती हैं और दिन को उनके सिर वृक्ष में
जा लटकते हैं यह काम जादू का जान पड़ता है इसी सोच
में दिन बीता और रात हुई फिर वैसे हीं सिर तालाव में
गिरे और बिछौना बिछा और सभा बनी और परियां और
मलिका तख्त और कुरसियों पर जा बैठीं नाच होने लगा
हातिम मन में सोचता कि आज का वादा किया है देखिये
पूरा करती है या नहीं जब आधी रात हुई फिर वैसेही दस्त
रखान बिछा और भांति भांति के खाने चुने गये मालिका
ने खाने को खाना उसी परी के हाथ भेजा जब वह लेके हा
तिम के पास गई हातिम देखतेही कहने लगा कि तू ने कहा
था कि कल्ह सब वृतांत कहूंगी और नाम बताओगी तो तुझे
उचित है कि आज अपनी बात पूरी कर कि मै कई दिन का भू

खाऊं खाना खाव उसने जाके यह बात मलिका से कही मलि
का ने कहा कि जाके उस्से कहा कि जब तू मलिका के पास आ
वेगा तब यह भेद खुल जावैगा पर पहिले खाना खा फिर मेरे
साथ चल हातिम यह बात सुन खाना खा उसके साथ होलि
या वह गोता मार कर उसी जगह जा खड़ी हुई हातिम ने जो
आखैं बंद कर तालाब में गोता मारा और धरती में उसके
पाव लगे आंख खोल के देखा तो न वह वृक्ष है न वे परियां
एक बड़े जंगल में खड़ा है सहसा चीखें मारने और उसासें
भर के सिर पर धूर डालने लगा निदान ऐसेही सात रात
दिन बीत गये तब परम कृपाल परमेश्वर ने ख़्वाजा खि
ज़र को आज्ञा दी कि तुम उस जंगल में जाओ जहां हाति
म सिड़ी के समान आहें मार २ के रो रहा है उसकी सहाय
करो संसार में वह बहुतसी भलाई करेगा सुयश में विदि
त होगा ख़्वाजा खिज़र हरे कपड़े पहिने और आसा हाथ में
लिये हातिम की दाहनी ओर से देख पड़े हातिम उन्हें देख
कर और भी आहें भरने लगा उन्होंने यह दसा देख दया
कर अपना हाथ उस के मुह पर फेरा वह उसी क्षिण भला
चंगा हो कहने लगा कि पीर मुरशिद यह कौन सा मकान
है उन्होंने कहा कि इसे खैर पुर्स सहरा कहते हैं हातिम ने
फिर पूछा कि मैं यहां कैसे आया उन्होने उत्तर दिया कि तूने
उस तालाब में उस परी के साथ गोता मारा था वह तालाब
तिलस्म से बना है उसका यही प्रभाव है कि जो उसमें गो
ता मारे यहां आनिकलै वह मकान इस जगह से तीन सै
कोस है हातिम इस बात के सुनते ही धरती पर गिरि रो
रो कहने लगा कि हाय मेरे मन को क्या हुआ और वहां कै
से पहुंचोगा जो मेरा अभिलाष पूरा न हुआ तो मैं तड़प
तड़प मरजाऊंगा ख़्वाजा ने पूछा कि तेरा अभिलाष क्या

है हातिम बोला कि मैं जिस जगह था वहीं जा पहुंचौ उन्होंने क
हा कि तू मेरा आसा पकड ले और आंखें बंद कर उसने वैसा
ही किया एक क्षण में जो आंखें खोल के देखा तो वही जंगल
और वही वृक्ष और वेई सिर डालियों पर लटकते हैं हातिम
सहसा उस वृक्ष के पास आया और उस पर चढने लगा वह
वृक्ष ऐसा हिला कि हातिम ने जाना कि मैं गिर पडूंगा पर
वह वृक्ष की जड से लिपट गया वह वैसे ही हिलता रहा जो
यह थोडा और चढ़ा तो एक तडाका हुआ और वृक्ष बीच से
फटा हातिम उस में समा गया जब उसने देखा कि अब कुछ
वस नहीं चलता तब घवराया और डरा कि यह क्या आफ़
त है एक वार में उनके लिये तालाव में गिरा तो उस आप
दा में पडा जो वृक्ष पर चढ़ा तो यों फंसा जितना यत्न करता
हूं उतना नीचे चला जाता हूं निदान उसका वदिन सब का
सब वृक्ष में छिप गया केवल आंखें बाहर रह गईं उसी सम
य ख़्वाजा ख़िजर फिर पहुंचे और कहने लगे कि तू आप को
आपदा में क्यों डालता है क्या जीने से तृप्त होगया हातिम
की वुरी दसा थी कुछ न बोला तब उन्हों ने उस पर दया क
र एक आसा उस वृक्ष पर मारा कि वह मोम सा होगया
हातिम उस्से निकल आया पर सिथिल था वडी विलम्ब
में अब सावधान हुआ तब ख़्वाजा ने कहा कि तू इतना दु
ख क्यों सहता है तुझे उनसे क्या काम है हातिम बोला कि
मैं किसी प्रकार उनका वृत्तांत जानो उन्होंने कहा कि यह
सिरदार शाम अहमर जादूगर की वेटी है और मकान
का नाम अहमर पर्वत है एक दिन इस लडकी ने अपने
वाप से कहा कि वावाजान अब मैं जवान हुई मेरा व्याह
कर दो यह बात सुन उसके वाप ने क्रोध कर इस लडकी
को उस दिन से इस तिलिस्म के तालाव में डाल दिया यह

तालाब और वृक्ष जादू का है और जो सिर सब से ऊंचा लटकता है उसी लड़की का है नाम मलिका ज़री पोश है और वह परबत यहां से तीन सौ कोस है जादू के ज़ोर से एक दिन में वहां जा सकती है जब तक शाम अहमर जादूगर जीता रहैगा तब तक उसका ब्याह न करैगा यह इसी दसा में पड़ी रहैगी किसी के हाथ न लगैगी यह सुन हातिम ने कहा कि मैं ने जाना कि मेरे भाग में इसी जगह मरना लिखा है जो परमेश्वर ने मुझे यहां पहुंचा के शाम अहमर के जादू में फंसाया ख़्वाजा ने कहा कि तू उसकी बेटी की चाह रखता है तो आप को आपदा में डालता है इसी में भला है कि उसको अभिलाष छोड़ दे हातिम बोला कि मैं अपने प्राण से हाथ धो चुका हूं होना हो सो हो जब तक यह सुकुमारी मेरे हाथ लगैगी तब तक मैं पीछा न छोड़ुंगा ख़्वाजा ने पूछा कि निदान तेरा अभिलाष क्या है उसने कहा कि इस वृक्ष पर चढ़ के उनके पास जा पहुंच उन से बातें करूं ख़्वाजा ने कहा कि जान बूझ अपने को आपदा में डालने से क्या फायदा हातिम ने बिनती की कि मेरा इसी में भला है कि एक पल उनसे अलग न हूं जो मेरे भाग में यह दुख लिखा है तो सुख कहां से पाऊंगा यह सुन ख़्वाजा ने अपना आसा उस वृक्ष पर मारा और इस्म आज़म पढ़ के कहा कि अब चढ़ जा यह कह वे लोप होगये हातिम जब वृक्ष पर चढ़ा उस सुकुमारी के सिर के पास पहुंचा हातिम उसका सिर भी उन्हीं सिरों के पास लटकने लगा और देह गिर के तालाब में रह गया आकाश और धरती से पुकार हुई जब सूर्य्य अस्त होगये और रात हुई वे सिर हातिम के सिर समेत तालाब में गिरि देह धर इकट्ठे हो काम काज करने लगे और मलिका भी तखत पर आ बैठी हातिम हाथ बांध तख़्त के कोने से ल

ग के खड़ा हुआ पर बे सुधि था यह न जानता कि मैं कहां था
कहां आया कहां जाऊंगा इतने में मलिका ने कहा कि अ
रे जवान सच कह कि तू कौन है और तेरा क्या नाम और क
हां से आया हातिम ने कहा कि मैं भी एक तेरा सेवक इसी
तालाब से निकला हूं उसने हातिम की बातों से जाना कि
यह मुझ पर आशिक़ हुआ है यह सुन कुछ न बोली और
नाच देखने लगी आधी रात बीते दस्तर खान बिछा और भां
ति भांति के स्वादिष्ठ खाने मीठे सलौने और रंग रंग के मे
वे चुन दिये मलिका ने हातिम को अपने पास बिठा सुथरे
सुथरे खाने उसके आगे धर बड़ी दया और प्यार से कहा
कि अरे जवान कुछ खाना खा और पानी पी हातिम खाना
खाने लगा पर यह न जानता था कि मैं कौन हूं और कि
स लिये आया और कहां जाऊंगा खाना खाने के पीछे फि
र नाच होने लगा सारी रात ऐसे ही बीती सबेरा होते स
ब सिर हातिम के सिर समेत वैसे ही फिर वृक्ष की डालि
यों में जा लटके और धर तालाब में डूब गये ऐसे ही कई
दिन बीते तब एक दिन ख़्वाजा खिज़र ने फिर आ के अपने
आसे से हातिम का सिर उतार और धर तालाब से निकाल
इस्म आज़म यहां तक पढ़ा कि उसकी देह में प्राण आगये
और ज्ञान दूर होगया आंख खोल के देखा कि वेई आसा
लिये सिरहाने खड़े हैं उठके उनके पैरों पर गिर कहने
लगा कि आप मुझे इस दसा में फंसा देखते हो और कुछ
सहाय नहीं करते उन्होंने कहा कि तू अब तक कहां था हा
तिम बोला कि मैं इसी वृक्ष पर उस परम सुंदरी का तमा
शा देख रहा था फिर ख़्वाजा ने पूछा कि अभी उसका अभि
लाष तेरे मन में है हातिम बोला कि परमेश्वर के लिये
इतनी कृपा करो कि मेरा अभिलाष पूरा हो नहीं तो इसी

दसा में फंसा रहूंगा बलकि मरजाऊंगा ख़्वाजा ने कहा कि जब
तक उसका बाप न मारा जायगा उसे कोई न पावेगा क्योंकि व
ह जादूगर है उसने उसे जादू में फांस रक्खा है उसकी बेटी के पा
ने की यह युक्ति है कि जो मैं कहूं सो तू कर हातिम बोला कि मैं
आपकी आज्ञा से बाहर न हूंगा यह सुन उन्होंने कहा कि मैं
तुझे इस्म आज़म सिखाये देता हूं तू पवित्र रहना झूठ न बोल
ना नित्त नहाना दिन भर व्रत करना हातिम ने सब बातें अंगी
कार की तब उन्होंने इस्म आज़म सिखा के कहा कि तू अब उ
स पर्वत की ओर जा कुछ मत डर हातिम बोला कि मैं अहम
र पर्वत पर कैसे जाउ उन्होंने कहा कि तू मेरा आसा पकड़
और अपनी आंखें बंद कर हातिम ने वैसेही किया एक क्षण
में आंखें खोल के देखा तौ कोई बस्तु न देख पड़ी केवल एक ब
ड़ा परवत देखा और उस पर बे रितु फूल फूले देखाई दिये हा
तिम उसे देख बहुत प्रसन्न हो उस पर चढ़ने लगा पैर रखते
ही वहां के पत्थरों ने उसके पैर ऐसे पकड़े कि उठाना कठिन
होगया जब बहुत ही बिबस हुआ तब मन में कहने लगा
कि अब इस्म आज़म पढ़ना चाहिये पढ़तेही उसके पैर पत्थ
र से छूट गये तब जाना कि अहमर पर्वत यही है तब तो वह
इस्म पढ़ता हुआ चढ़ गया इतने में एक मैदान परम रमणी
क देख पड़ा आगे बढ़ा तो एक तालाब निर्मल जल से भरा हु
आ देखा उसके आस पास मेवों के वृक्ष ऐसे देखे कि कभी दे
खने में नहीं आये थे हातिम कपड़े उतार उसमें अस्नान कर
पवित्र कपड़े पहिन इस्म आज़म पढ़ने लगा उसके प्रभाव
से फाड़ने और काटने वाले जादू के पशु पक्षी सब भागगये
यह समाचार अगम अहमर को पहुंचा कि सब पशु पक्षी भा
गे हुए चले आते हैं उसने ज्योतिष की पोथी देखके जाना कि
एक दिन हातिम ताई इस परवत पर आके हमारा सब जादू

नष्ट करैगा यह यही है जो वहां तालाव पर इस्म आज़म पढ
ता है और कोई जादू उस इस्म के पढ़ने वाले पर नहीं चलता
क्या उपाय कीजिये कि वह इस्म आज़म भूल जाय यह बिचा
र एक मंत्र पढ चारौं ओर फूंका उसके फूंकते ही परियों का
एक झुंड दिखाइ दिया उसमें एक परी मलिका जरीं पोश के
आकर सुराही पियाला हाथ में लिये दिखाई दी शाम अहमर
ने उससे कहा कि तुम जाके हातिम को शराब का पियाला पिल
वा एकर दो वह सब परियों समेत उस तालाव पर जा पहुंची
हातिम देख अचंभे मे हुआ कि ये सब उस वृक्ष में लटकती
थीं यहां कैसे आईं फिर मन में सोचा कि यह उसके बाप का
मकान है आनिकली हैं इतने में मलिका जरीं पोश की सू
रत हातिम के पास आके कहने लगी कि अरे हातिम तूने ब
डा क्लेश सहा आज मेरे बाप ने मुझे बाग़ की सैर के लिये बु
लवाया है मैं तुझे देख बहुत प्रसन्न हुई यह कह पास बैठ पि
याला शराब से भर हातिम के हाथ में दिया हातिम ने पिया
ला ले मन में कहा कि प्यारी का समागम धन्य है इसे हाथ से
देना न चाहिये निदान मुह से लगा लिया वह सुंदरी उसी
समय काला देव हो हातिम को बांध शाम अहमर के पास
ले गई उसने देखते ही सिर नीचा कर मन में कहा कि ऐसे ज
वान को मरवाना बड़ी मूर्खता है पर यह बैरी है कुछ सज़ा
देना चाहिये नौकरों से कहा कि इसे अग्नि कूप में डाल दो
नौकरों ने हातिम को आग के कूये में डाल दिया और हज़ार
मन की एक सिला ले लोहे की लाल कर कूये के मुह पर ढांक
दी हातिम लोटता पोटता चला जाता पर रीछ की बेटी का
मोहरा जो उसके मुह में था कूये में छिन २ ठंढा होता जाता
नौकरों ने शाम अहमर को खबर की कि हातिम जलके रा
ख होगया उसने ज्योतिष की पोथी देख के जाना कि ये झूठ

कहते हैं हातिम एक मोहरे के गुण से भला चंगा जीता है उसे
आंच भी नहीं लगती फिर सोचने लगा कि वह मोहरा कैसे लि
या जाय जब तक वह उसके पास है उसे कोई बाधा न होगी पर
कठिन यह है कि वह मोहरा वे उसके दिये बल से हाथ नहीं
लग सकता यह बिचार नौकरों से कहा कि उसे जल्द कुये से
निकाल उसी तालाब पर ले जाओ वे हातिम को वहीं पहुंचा
आये परमेश्वर को प्रणाम किया और शाम अहमर मंत्र
पढ़ने लगा एक क्षण में दो परियां मलिकाजरीं पोश की सूरत समेत हातिम
के सामने आई मलिकाजरीं पोश की सूरत ने आगे बढ़के हातिम से कहा कि अ
रे मेरे प्यारे मित्र अब मैं तेरे पास न बैठूंगी दूरही से देखा करूंगी
क्योंकि उस दिन मैं तेरे पास बैठी थी मेरे बाप ने कालादेव
भेज तुझे पकड़वा मंगाया परमेश्वर ने तुझे उस बला से ब
चाया ऐसा न हो कि मैं तेरे पास बैठूं और बाबाजान सुने तो
फिर तेरी वही दसा करे हातिम ने उसका हाथ पकड़ पास
बिठा लिया तब वह कोर कटाक्ष कर कहने लगी कि तू मुझे
सच मच चाहता है वह बोला कि तू मुझे प्राणों से भी अधिक
प्यारी है तब उसने कहा कि एक वस्तु मैं तुझ से मांगों जो दे
तो जानों कि सच्चा आशिक़ है हातिम ने कहा कि वह कौन
सी वस्तु है मैं तो दरिद्री हूं मेरे पास धन रत्न नहीं यह सुन
वह कहने लगी कि मैं उस रीछ की बेटी का मोहरा चाहती
हूं धन रत्न की चाह नहीं हातिम ने कहा कि तू ने कैसे जाना
कि मेरे पास है वह बोली कि मेरे बाप ने ज्योतिष के बल से
बताया है हातिम ने कहा कि वह मोहरा मित्र से अधिक प्या
रा नहीं है चाहता था कि निकाल के उसे दे कि एक वृद्ध मनु
ष्य ने उसे दाहिनी ओर से डांटा कि अरे मूर्ख यह क्या कर
ता है मोहरा देगा तो बहुत पछितायगा और प्राण भी जांय
गे यह बात सुन हातिम ने कहा कि बाबा तू कौन है जो भले।

काम में रोकता है मोहरा मेरे किस काम आवैगा जो अपनी प्या
री को न दूं क्योंकि यह बात प्रसिद्ध है कि वही फूल जो मेहशाहि
चढे उसने कहा कि मैं वही हूं जिसने तुझे इस्म आज़म सि
खाया था हातिम उठ के उनके पैरों पर गिर पडा और कहने
लगा कि जिस को मैं चाहता था आपकी कृपा से मैंने उसे
पाया उन्होंने कहा कि अरे मूर्ख यह क्या कहता है यह अपने
मन में मत समझ यह मलिका नहीं है भूले मत यह जादू
की तसवीर है पहिले इसी को शाम अहमरने तेरे पास मलि
का का आकार बना के भेजा था और उसके हाथ से शराब का
पियाला पिलवा के तुझे अग्निकुंड में डुबोया इसी मोहरे के
प्रभाव से तू जीता बचा ये परियां जो तेरे पास आई हैं सब
जादू की हैं इस्म आज़म पढ जो मलिका है तो बची रहेगी जो जा
दू की हैं तो जल जायगी हातिम ने उनके पैर चूम तालाब में
मुह हाथ धो कुल्ली कर ज्योंही इस्म आज़म पढ़ने लगा त्योंही
परियों का रंग बेरंग हुआ और थर थराने लगीं और मलि
का की आकृति कपने लगी फिर सब के सिर से अग्नि की ज्वा
ला उपजी कि वे दीपक समान जलने लगीं क्षण भर में सब
की सब जल के भस्म होगईं हातिम पछिताने लगा कि यह
तसवीर ही मुझ को बहुत थी मलिका की जगह इसी को दे
ख के अपने व्याकुल जी का संतोष करता था अब कैसे धी
र्य धरूंगा और जी को थांभोगा रोने बिन कुछ और औषधि
नहीं निदान बिहवल हो रोने लगा इतने में यह समाचार
शाम अहमर को पहुंचा कि वे जादू की मूरतें जल के भस्म
होगईं इस बात के सुनते ही उसने जादू के बल से शैतान को
बुला के बडी प्रतिष्ठा से अपने पास बिठाया और कहा कि
मैं हातिम के हाथ से बहुत विवश हूं उसने कहा कि अभी
उसकी आयुर्दा बहुत है वह कब किसी के हाथ से भाग जात

है और किसी के छल में आता है इसी में भला है कि तू अपनी बेटी उसे ब्याह दे वह बोला कि जब तक जीता हूं यह काम कभी न करूंगा उसने कहा कि जो यही बात तेरे मन में थी तो मुझे क्यों बुलाया उसने कहा कि हातिम ने हमारी बहुत सी मूरतें जला के भस्म कर दीं मैं चाहता हूं कि मैं इस्म आज़म उसे भुला दो उसने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि ख़्वाजा ख़िज़र परमेश्वर की आज्ञा से उसकी रक्षा करते हैं। वह मेरा भुलाया इस्म आज़म न भूलेगा पर मुझसे इतना हो सकता है कि वह अचेत सो जाय और स्वप्न में उसका बीजपात होवे यह बात सुन शाम अहमर प्रसन्न हो उसके पैरों पर गिर पड़ा वह उसे धीर्य दे लोप हो गया और हातिम को अचेत कर उसका बीजपात कर दिया हातिम घबरा के चौंक पड़ा और आप को अपवित्र देख नहाने का बिचार किया जादूगर तो घात में लग ही रहा था अवसर पाके मंत्र पढ़ने लगा और काला देव धरती से उपजा और हातिम की ओर दौड़ा हातिम को अपवित्र का भय था डरा कि इससे कैसे लड़ूं निश्चय है कि मारा जाऊं इतने में देव आन पहुंचा और उसे पकड़ के शाम अहमर के पास ले गया वह उसे देख के बोला कि इसको मारना न चाहिये क्योंकि वह मोहरा नष्ट हो जायगा जब तक वह अपनी प्रसन्नता से न दे तौक़ बेड़ी पहिना के दो भारी खंभों मे कस दो पर सिर और मुख खुला रहे उसके सेवकों ने वही किया हातिम आप को बंधा देख रो रो के परमेश्वर से बिनती करने लगा कि परमेश्वर इस समय तेरे बिन और कोई सहाय करने वाला नहीं और शाम अहमर ने अपने जादूगरों से कहा कि तुम सब इसके चारों ओर बैठे और चौकी दो उन्होंने उसके कहने से वैसा ही किया निदान सात दिन रात ऐसे ही बीते हातिम भूख प्यास से बहुत व्याकुल था इतने में आ

म अहमर आया और कहने लगा कि अरे हातिम क्या दस
है वह कुछ न बोला तब शाम अहमर ने कहा कि जो वह मोह
रा मुझे दे तो अभी छोड़दूं हातिम बोला कि जो तू अपनी बेटी
मुझे ब्याह दे तो अभी देता हूं यह सुन उसने बहुत क्रोध कर अ
पने सेवकों से कहा कि तुम इसके ऊपर पत्थरों का मेह बरसा
ओ जिसमें इसका सिर टूट टूक टुकड़े होजाय सब जादूगर
पत्थर हाथ में लेके हातिम के पास आये और कहने लगे कि
अपने प्राण पर दया कर और मोहरा देडाल नहीं तो तेरा सिर
पत्थरों से तोड़ डालेंगे कि भेजा निकल पड़ेगा हातिम न बोला
फिर जब उन्हों ने बार बार कहा तब बोला कि परमेश्वर की
कृपा से तुम्हारे सिरदार को मार के उसकी बेटी अपनी सेवा
में रक्खूंगा यह बात सुन वे जादूगर क्रोधकर पत्थरों का मेह ब
रषाने लगे यहां तक कि मेह बरसाया कि हातिम उन पत्थरों
में छिपगया और वहां एक पहाड़ सा होगया तब उन जादूगरों
ने शाम अहमर से आ के कहा कि हातिम मरगया उसने क
हा कि तुम झूठ कहते हो हातिम अभी तक जीता है उन्हों ने
कहा कि जो लोहे का भी देह हो तौभी धूर होजाता यह तो मनु
ष्य था कैसे बचा शाम अहमर ने कहा कि जो तुम्हें बिश्वास
नहीं तो पत्थरों को सरका के देखलो कि उसे कुछ बाधा नहीं हुई
जादूगरों ने जो पत्थर सरका के देखा तो जीता पाया फिर झुं
झलाके यहां तक पत्थर बरसाये कि पहिले से दूना पहाड़सा
होगया फिर जो पत्थरों को सरका के देखा तो उसे कुछ बाधा
न हुई थी ऐसे सात दिन बीत गये तब शाम अहमर ने उनसे
कहा कि तुम ऐसेही नित मारा करो और आप महल में जाके
मंत्र पढ़ने लगा जब हातिम भूख प्यास से ब्याकुल हो के मरने
लगा तब चौकीदारों से कहा कि अरे मित्रो तुम ने इस मोहरे
का प्रभाव देखा यह ऐसा है कि जिसके कारण से न मैं आग में

जला न पत्थरों से मरा अब जो कोई मुझे यहां से उस तालाब
पर ले जायगा यह मोहरा उसी को दूंगा उन्होंने कहा कि हमें ते
रा मोहरा न चाहिये पर एक लाल चीने कन अंखियों से इशा
रा किया कि मैं तुझे उस तालाब पर ले जाऊंगा थोड़ी रात जानेंद
हातिम ने भी इशारे से कहा कि मैं भी यह मोहरा तुझी को दूं
गा जब आधी रात हुई सब के सब सोगये पर एक वही चौकी
दार मोहरे के लालच से जगता रहा थोड़ी विलम्ब पीछे चुप
के उठ हातिम के पास आके कहने लगा कि जो कहता है तो मैं
तुझे उसी तालाब पर ले चलूं हातिम ने कहा कि मुझे इतना
बल नहीं है चलना तो एक ओर इन पत्थरों से कैसे निकलूं
उसने कहा कि मैं अपने जादू के बल से निकाले लेता हूं तू
चिंता मत कर यह कह के मंत्र पढ़ने लगा इतने में एक का
ला देव उपजा वही उन दोनों को तालाब पर पहुंचा के लोप
होगया हातिम ने पहिले कपड़े धोये फिर नहा के पवित्र हो
थोड़ा सा पानी पीके तालाब से बाहर निकला कपड़े पहिने
तब उस जादूगर ने कहा कि हातिम मैंने उस मोहरे के लाल
च उन पत्थरों से तुझे निकाल के इस तालाब पर पहुंचाया
अब तुझे भी उचित है कि अपने बचन का निर्वाह कर और
मोहरा मुझे दे हातिम ने कहा कि तू ने मेरे साथ भलाई की
मैं भी तेरे साथ भलाई करूंगा जिस समय शाम अहमर
को मारूंगा यहां का राज तुझे दूंगा उसने कहा कि हातिम
इस मोहरे से अधिक मुझे जगत की कोई दूसरी वस्तु न
चाहिये जो देना है तो वही दे हातिम ने कहा कि यह मोहरा
एक मित्र की निशानी है तुझे कैसे दूं तू जो यह मोहरा माग
ता है किस काम के और किस के लिये उसने कहा कि मैं अपने लि
ये चाहता हूं हातिम ने कहा कि अरे मूरख जो तू परमेश्वर के
लिये मांगता तो मैं अभी देदेता उसने कहा कि हमारा स्वामी

शाम अहमर का गुरू कमलाक है तेरे परमेश्वर के लिये क्यों
मारूं हातिम बोला कि अरे दुष्ट तू जीव को ईश्वर कहता है मेरे
सामने से दूर हो मैंने जाना कि तू परमेश्वर को नहीं मानता
अब मुझे निश्चय हुआ कि तू महा दुष्ट है क्या करूं कि विबश
हूं क्योंकि तू ने मेरा बड़ा उपकार किया और भलाई का बदला
बुराई नहीं दे सकता नहीं तो तू अपने कहने का दंड पाता वह
बोला कि मुझे तुझ से मोहरा लेना कुछ कठिन नहीं जो आप से
देता है तो तेरे प्राण बचते हैं नहीं तो इस तालाब में इतने गोते
दूंगा कि तेरे प्राण निकल जायगे हातिम बोला कि अरे दुष्ट च
ुप न बक चल मेरे सामने से दूर हो मोहरा मेरा है तू बला
त्कार से छीन ले सकेगा पर जो तू ने मेरे साथ भलाई की है इ
स लिये इस देश का राज तुझे दूंगा सो भी तब मिलेगा कि भले
काम करने की प्रतिज्ञा करे और परमेश्वर को एक जाने जादू
करना छोड़ दे इस बात को सुन वह मंत्र और हातिम इस्म
आज़म पढने लगा उसने अपने बश भर मंत्र पढ के बहुत फूं
का पर कुछ न हुआ इस्म आज़म के प्रभाव से वह आप ही का
प के भागा और अपने साथियों के पास आके प्राण भय से
चुपके सो रहा कि कोई न जाने और हातिम उसी तालाब पर
बैठ इस्म आज़म पढ़ा किया इतने में प्रातःकाल हुआ सब
जागे तो हातिम को वहां न पाया तब डरे कि शाम अहमर
हम को जीता न छोड़ैगा यह समझ आप ही सिर पर धूर डाल
लेते उसके आगे आके कहने लगे कि प्रभु हातिम तो लोप
होगया वह इस भयानक समाचार के सुनतेही उसने क्रोध
कर अपने ज्योतिष के विचार से कहा कि हातिम उसी ताला
ब पर बैठा है और सरतक चौकीदार ने मोहरे के लालच से
उसे वहां पहुंचा दिया अब तुम मे से कोई जाके सरतक को मे
रे सामने पकड़ लावे मैं उसे जीता न छोड़ूंगा वे उसके कह

नेसे सरतक को पकड़ने गये वह अपनी चालाकी से इस बा
त को समझ के भागा और हातिम के पास जा के कहने लगा
कि हातिम तेरे कारण मेरे प्राण जाते हैं यद्यपि मैंने तुझ से
बुराई नहीं की भलाई तो की है कि तुझे कठिन बंधन से छुड़ा
या एक तो मोहरा हाथ न लगा दूसरे प्राण का भय हुआ हा
तिम उसके उपकार पर दृष्टि कर लज्जित हुआ और धीर्य
दे कहने लगा कि तू धीर्य रख कुछ चिंता मत कर तब शाम
अहमर ने देखा कि सरतक भाग गया तब मंत्र पढ़ने लगा
इतने में सरतक को एक अग्नि की ज्वाला दृष्टि पड़ी तब पु
कार के हातिम से कहा कि मुझे बचा नहीं तो जल के भस्म हो
ता हूं उसने इस्म आज़म पढ़ के उस अग्नि पर फूंका वह बुझ
गई फिर हातिम ने सरतक से कहा कि तू मेरे पीछे खड़ा हो
रह कुछ चिंता न कर सरतक बोला कि अब मैं तेरा हो चुका
मुझे शाम अहमर के जादू से बचा ले हातिम ने कहा कि तू
धीर्य रख उस की क्या सामर्थ्य जो तेरा कुछ कर सके यह क
हके हातिम उठ खड़ा हुआ और इस्म आज़म पढ़ता शाम
अहमर की ओर चला और सरतक भी उसके पीछे हो लिया
तब शाम अहमर ने जाना कि हातिम और सरतक इधर
चले आते हैं अपना सब लशकर साथ ले शहर से बाहर
निकला और मंत्र पढ़ा कि घटा उठी और बिजली चमकने
लगी बादल गरजने लगा यह देख सरतक कांपने लगा
और कहा कि हातिम यह जो देख पड़ता है सो जादू है संभ
ल जा उसने इस्म आज़म पढ़के आकाश की ओर फूंक
दिया वे सब उत्पात उसी लशकर पर पड़े यह चरित्र देख
शाम अहमर अचंभे में हो कहने लगा कि हातिम भी बड़ा
जादूगर है कि जिसके जादू ने मेरे जादू को नष्ट कर दिया क्या
कीजिये इतने में एक और मंत्र स्मरण करके पढ़ा कि एक प

हाड़ धरती से निकल हातिम के सिर तक पहुंचा सरतक
पुकारा कि हातिम संभल जा यह दूसरा जादू है फिर हातम
ने इस्म आज़म पढ़ के फूंका तो वह पहाड़ कंकरियां होके
उन्हीं के सिर पर जा पड़ा उस्से चार हज़ार जादूगर मरे और
एक बड़ा पत्थर शाम अहमर के सिर पर आया पर वह अ
पने जादू के बल से बचगया और पत्थर किसी जंगल में जा
पड़ा तब हातिम इस्म आज़म पढ़ता हुआ आगे बढ़ा शाम
अहमर ने देखा कि हातिम निर्भय चला आता है और मु
रू तक पहुंच जाते देख पड़ता है फिर एक मंत्र पढ़ के ऐसा
फूंका कि चार अजगर उपजे पर उसी के लशकर पर जा पड़े
और सब लशकर निगल गये केवल तीन मनुष्य बचे फिर
शाम अहमर ने मंत्र पढ़ के फूंका तो अजगरों ने निगले हुओं
को उगल दिया और आप फिर गये यह देख तीन हज़ार जादू
गर आग भय से भागे शाम अहमर ने अपना सा पुकार
पुकार कहा कि मत भागो और धीर्य दिया पर किसी ने न सु
ना तब शाम अहमर ने देखा कि कोई नहीं फिरता तब उ
सने ऐसा मंत्र पढ़ा कि वे सब उसी बन के वृक्ष होगये और
आप अकेला हातिम के सामने आके मंत्र पढ़ने लगा अब
देखा कि हातिम पर कोई मंत्र नहीं चलता एक मंत्र पढ़ आ
काश की ओर उड़गया हातिम ने जब देखा कि शाम अहमर
पर लगा के उड़गया तब सोचने लगा कि अब क्या कीजिये प्रेम
रतक बोला कि वह अपने गुरू कमलाक़ के पास गया है
और वह ऐसा जादूगर है कि एक आकाश सूर्य चन्द्र नक्ष
त्रों सहित बनाया है और एक पहाड़ के भीतर बड़ा शहर ब
साया उसमें चालीस हज़ार जादूगर रहते हैं वह दुष्ट बड़ा जा
दूगर है और उस का घर यहां से तीन सौ कोस पर है हातिम
ने कहा कि परमेश्वर एक है उसका कोई साझी नहीं उसने

सब को उत्पन्न किया है यह किसी से नहीं उपजा न-
पत्थर में है वह न रत्न में चमकता पर यह सभी यत्न में-
सरतक ने ये बातें सुन के कहा कि सच मैंने इस्म-
आजम के प्रभाव देखे अब जादूगरों से श्रद्धा उठ गई
हातिम ने उसे धीर्य देके कहा कि मैं अब कमलाक पर
बत पर जाया चाहता हूं सरतक ने कहा कि जो आपकी
प्रसन्नता हो तो मैं भी आप की सेवा में रहूं ये वृक्ष जो देख
पडते हैं प्राम अहमर के लश्कर के लोग हैंगे क्योंकि वह
इन्हें जादू के बल से वृक्ष बना गया है जो तुम से हो सके
इन पर से जादू दूर कर जैसे थे वैसे बना के अपने साथ ले
चलो इस बात को सुन हातिम ने थोडा पानी पढ सरतक
को देके कहा कि तू इस पानी को ले जा के परमेश्वर का ना-
म ले उन पर छिडक दे फिर परमेश्वर के नाम का प्रभाव दे-
ख सरतक वह पानी ले गया और उन वृक्षों पर छिडक-
ने लगा परमेश्वर की कृपा और इस नाम के प्रभाव से वे
सब जैसे थे वैसे ही होके पूछने लगे कि अरे सरतक प्राम
अहमर कहां है उस ने कहा कि वह तुम सब को जादू से वृ-
क्ष बना कमलाक के पास गया हातिम ने इस्म आज़म पढ के
फिर तुम्हें मनुष्य बनाया है तुम अपनी दशा कहो कि कैसे
थे उन्हों ने कहा हम धरती में गड़े थे चलने फिरने का पराक्र-
म न था और गांठ गांठ दुखती थी अब ईश्वर की कृपा से अच्छे
हुए पर अद्भुत मनुष्य परमेश्वर का जन आश्चर्यवान और
बली है जो प्राम अहमर के जादू पर प्रबल हुआ आपस-
में संमत करके सब मिल हातिम के पास आके पैरों पर
गिर के कहने लगे कि आगे हम प्राम अहमर के सेवकों
में थे अब तेरे दासों में हुए तूने हमारा बड़ा उपकार किया
परमेश्वर तुझ पर प्रसन्न रहे हातिम ने ये बातें सुन इस्म-

आज़म पढ़ उन पर फिर फूंका उन में जो कुछ जादू का-
अंधा रह गया था सो जाता रहा जैसे थे वैसे हो के हातिम
से बोले कि हे प्रभु अब कहां जाने का मनोर्थ है हातिम ने
कहा कि मित्रो मुझे फ़ग़ाम अहमर से कुछ काम है जब त
क वह मेरे हाथ न आवेगा तब तक मैं कुछ काम न करूं
गा उस की बेटी के साथ ब्याह किया चाहता हूं जो उस
ने प्रसन्नता से ब्याह दी तो भला नहीं तो जीता न छोड़ूंगा
वे बोले कि उस की बेटी आपने कहां देखी जो ऐसे मोह
गये हातिम ने सब वृत्तांत आदि से अंत तक वरणन कर
के कहा कि मुझे केवल उस के मिलने का अभिलाष है-
मैं परिश्रम करता और क्लेश सहता यहां तक आ पहुंचा-
हूं और फ़ग़ाम अहमर ने जो दुख मुझे दिये हैं उन को नहीं क
ह सकता पर परमेश्वर धन्य है जिस ने मुझ से निर्बल को ऐ
से बली पर प्रबल किया यद्यपि यहां से भाग के अपने गुरु
के पास गया है पर उस से क्या हो सकता है मैं परमेश्वर की
कृपा से उसे उस के गुरु सहित मार डालूंगा और उन दो
नों का नाम संसार से मिटा दूंगा उन्हों ने कहा प्रभु कमलाक़-
बड़ा जादूगर है उसे जीतना कठिन है हातिम बोला कि अ
रे मित्रो हिम्मत न हारो जो कुछ तमाशा देखा चाहते हो तो
मेरे साथ चलो नहीं तो यहां आराम करो मैं जानूं हूं और
फ़ग़ाम अहमर और कमलाक़ जानें वे बोले कि आप ने-
हमारे साथ बड़ी भलाई की है ये नहीं हो सकता कि हम
आप को अकेला जाने दें इसी में भला है कि हम भी आप के
साथ चलें यहां हमारा क्या काम है जो वह प्रबल हुआ तो हम
फिर आवैंगे आप जहां जायंगे हम भी साथ चलैंगे वह हमें
जीता न छोड़ैगा निदान हातिम सब को साथ ले कमलाक़-
परबत को चला थोड़ी दूर जाके वे बोले कि फ़ग़ाम अहमर

यहां से एक दिन में हम सब को ले उस परवत पर जाप
हुंचा था हातिम बोला कि यह सच है कि वह जादूगर था
अपने जादू के बल से इतना शीघ्र जाता था उन्हों ने क-
हा कि प्रभूजी आप जादूगर न हों तो ऐसे जादूगर को कै
से जीतो क्योंकि वह ऐसा जादूगर है कि परवत को मोम-
और मोम को पत्थर कर देता है इतने में सरतक बोला कि
अरे मूर्खों इस का चरित्र मैंने अपनी आंख से देखा है यह भी
एक दिन में वहां जा सकता है और शाम अहमर और क
मलाक़ को अपने वश कर सकता है जो चाहै तो उन्हें मार
डाले तुम नहीं जानते इस की सहाय परमेश्वर करता है फि
र हातिम बोला कि मैं इस्म आज़म जानता हूं जहां उस का
प्रभाव है तहां जादू का क्या काम देखियो इस इस्म के प्रभाव
से वे जल के भस्म हो जायंगे फिर वे सब के सब हातिम के-
साथ उस तालाव पर पहुंचे पर यह न जाना कि शाम अहमर
उसी मार्ग से निकला है और उस तालाव पर जादू पढ़ ग
या है सहसा सबों ने पानी पिया पानी पीते ही उनकी नाकों
से रुधिर के फुहारे छूटने लगे हातिम अचंभे में रह गया
पर उन से अलग न होता था कि ये मेरे साथ आये हैं उन्हें
अकेला कैसे छोड़ इस पानी के पीने से इन की यह दसा हुई-
निदान सारी रात इसी चिंता में बीती हातिम प्यासा रहा प
र पानी का एक बूंद भी न पिया जब प्रातःकाल हुआ वे सब
मधरक से फूल गये हातिम उन की दसा देख हाथ मल मल
रोता था पर यह न समझा कि शाम अहमर ने इस पानी पर
भी जादू किया निदान उनके जीने से निराश हो वहीं उस के
मन में आया कि कदाचित् इस्म आज़म के प्रभाव से वे अच्छे
हो जावैं उन के प्राण बचैं ये विचारि उस इस्म को पढ़ के फूंका
उनकी सूजन पहली बेर में उतर गई दूसरी बेर फिर पढ़ के

फूंका तब उन की नाकों से नीला पानी बहने लगा तीसरी बे
र में जैसे थे वैसे हो गये हातिम को असीस देके सराहने लगे
तब हातिम ने पूछा कि मित्रो यह क्या कारण है वे बोले कि-
हमें ऐसा जान पड़ता है कि ग़ाम अहमर इस तालाब पर
भी जादू कर गया हातिम ने उस पर भी इस्म आज़म पढ़ के
फूंका पहिले वह उबला फिर लाल हो के हरा हो नीला होग
या एक क्षण में निर्मल हो अपनी निज रंगत पर आ गया-
हातिम ने जाना कि अब इस तालाब से जादू जाता रहा थो
ड़ा पानी आप पिया तब उन से कहा कि अब पानी पिओ औ
र नहाओ जिस में जादू की गरमी इस्म आज़म के प्रभाव से तुम्ह
रे शरीरों से निकल जाय उन्हों ने उस का कहना किया और प्र-
ण कर कहा कि प्रभु हम आप के साथ हो के ग़ाम अहमर औ
र कमलाक़ से लड़ेंगे यह प्रतिज्ञा कर आगे बढ़े और ग़ाम
अहमर जो वहां से भागा तो कमलाक़ की डेवढ़ी पर आ खड़ा
हुआ द्वारपालों ने बिनती की कि प्रभु ग़ाम अहमर बड़ी दुर्द
शा से नंगे पैरों द्वार पर खड़ा है कमलाक़ ने उसे भीतर बुला
के गले लगा लिया और पूछा कि तुम पर ऐसी क्या आपदा प-
ड़ी जो ऐसी दशा से यहां आया उस ने कहा कि मेरे पहाड़ प
र एक हातिम नामी बड़ा जादूगर कहीं से आया है उस ने मेरी
यह दशा की कमलाक़ यह सुन आग बभूला हो गया और
कहने लगा कि मैं अभी उसे चौमेरवा कर तुझे देता हूं तू धीर्य
रख उसे धीर्य दे एक मंत्र पढ़ा और अपने परबत की ओर फूं
का वहीं एक अग्नि प्रगट हुई और उस परबत को चारों ओ
र से घेर लिया हातिम भी चार दिन पीछे उस परबत के समी
प जा पहुंचा साथियों ने कहा कि प्रभु कमलाक़ परबत य
ही है उस के चारों ओर जो यह अग्नि प्रज्वलित हो रही है
सो जादू का कारण है हातिम वहां ठहर गया और इस्म आ-

ज़म पढ़के उस परबत की ओर फूंका सब आग बुझ गई यह
समाचार कमलाक़ को पहुंचा फिर उस ने ऐसा एक जादू
किया जिस के बल से उस परबत के चारों ओर बड़ा समुद्र
उमगा और लहरें मारता हातिम की ओर बढ़ा सबों ने प्रा
र्थना की कि प्रभु यह जादू का समुद्र है अब हम इस में बिन
मृत्यु डूबने से नहीं बचते देख पड़े हातिम ने कहा कि घ
बराओ मत परमेश्वर का स्मरण करो यह कह इस्म आज़
म पढ़ फूंका वह समुद्र पवन से उड़ गया और धरती सूख
गई जादूगरों ने जाना कि कोई जादू इस मनुष्य पर नहीं-
चलता देखिये क्या होता है इतने में कमलाक़ ने एक मंत्र प
ढ़ा उस के पढ़ते ही दस दस पांच पांच मन के पत्थर बरस
ने लगे इतने बरसे कि उस परबत के चारों ओर एक और
परबत हो गया वह दृष्टि से रुक गया यह दशा देख हातिम
बैठ के इस्म आज़म पढ़ने लगा उस के प्रभाव से ऐसी पव
न चली कि उन पत्थरों को उड़ा ले गई परबत देख पड़ने-
लगा तब हातिम आगे बढ़ा कमलाक़ ने फिर ऐसा एक मंत्र
पढ़ा कि वह परबत हातिम के साथियों की दृष्टि से लोप
हो गया तब उन्हों ने प्रार्थना की कि प्रभु इस परबत को क
मलाक़ ने जादू से छिपाया है यह सुनि हातिम वहीं बैठ के
इस्म आज़म पढ़ फूंकने लगा परमेश्वर की कृपा से दो तीन-
दिन में परबत फिर देख पड़ा हातिम उठ खड़ा हुआ और-
साथियों समेत उस पर चढ़ गया जादूगरों ने देखते ही पुका
र मचाई कि यह मनुष्य भला चंगा यहां आ पहुंचा तब कम
लाक़ पूरा अहमर समेत उस आकाश पर चढ़ गया जो
उस परबत से तीन हज़ार गज़ ऊंचा था और अपने लश्क
र को भी चढ़ा लिया हातिम ने जब देखा कि कोई सामना
करने वाला न रहा तब निर्भय हो शहर में गया तो क्या देखा-

कि एक बहुत बडा शहर है और उस के मकान मनोहर औ
र बाज़ार स्वच्छ खुला हुआ उस में भांति २ की वस्तु रक्खी औ
र रत्न जग मगा रहे और मेवे मिठाईयों से भरे थाल अच्छी घु
कि से जगह २ चुने हुए थे पर मनुष्य का नाम न था हातिम ने
यह चरित्र देख अपने लोगों से कहा कि यहां के रहने वाले
क्या हुए वे बोले कि कमलाक़ सबों को श्राप के डर से दूसरे
आकाश पर ले गया जिस को उस ने बनाया है हातिम इस
बात को सुन के हंसा और कहा कि अब तुम क्यों भूखे मरते हो
परमेश्वर ने ये उत्तम पदारथ भोजन को दिये हैं उन्हें आनंद
से खाओ और परमेश्वर का धन्यवाद करो वे भूखे तो थे ही स
हसा खाने लगे जब खा चुके सूज के दम सम हो गये और स
बों की नाक से रुधिर टपकने लगा हातिम ने जाना कि वह दु
ष्ट इन वस्तुओं पर भी जादू कर गया है यह समझ के थोड़ा
पानी मंगवा उस पर इस्म आज़म पढ सब को पिला दिया
उसी क्षण जादू जाता रहा वे अच्छे हो गये फिर हातिम ने
इस्म आज़म पढ सब वस्तुओं पर फूंक के कहा कि अब
सुख पूर्वक खाओ जादू का औगुण इन से जाता रहा तब
उन्हों ने सुचित्ती से पेट भर खाया फिर हातिम ने पूछा कि जा
दू का आकाश कहां है उन्हों ने कहा कि वह अवन के आधार
गुम्मज़ सा देख पड़ता है हातिम उस की ओर देख इस्म आज़
म पढ पढ फूंकने लगा वह गुम्मज़ भी टुकडे २ हो वहां पर गि
र पड़ा और बहुत से जादूगर मर गये पर कमलाक़ और इस
म अहमर पहाड़ पर गिरे और एक ओर भागे हातिम इस्म-
आज़म पढता हुआ उन के पीछे चला निदान वे भी घबरा के
पहाड़ के नीचे गिर के टुकडे २ हो गये तब हातिम ने प्रसन्न हो
परमेश्वर का धन्य वाद कर सरतक़ से कहा कि मैंने तुम से
कहा था कि जब कमलाक़ को मारूंगा तुझे उस के देश का बाद

प्राह करूंगा इस लिये यह देश तुझे दे अपना वचन पूरा कर ता हूं पर जो तू परमेश्वर को एक जाने और उसी का पूजन करै और किसी जीव को दुख न दे और सदा न्याय किया करै यह कह फिर उन सब जादूगरों से कहा कि तुम सरलक कीसरदारी अंगी कार करो और परमेश्वर का स्मरण किया करो और आप को परमेश्वर का दास जानो जो उस के प्रतिकूल करोगे तो अपने किये का फल पाओगे और मैं अब मलिका जरी पोश के पास जाता हूं तुम सब आपस में मिले आनंद से रहो उन्होंने कहा कि प्रसन्नता तो हमारी इसी में है कि आप के साथ चलैं पर आज्ञा भंग नहीं कर सकते निदान हातिम उन्हें वहां छोड़ आप शाम अहमर की बेटी के पास चला कुछ दिन में वहां जा पहुंचा तो क्या देखता है कि न वह तालाव है न वह पानी है पर वह वृक्ष वैसा ही हरा भरा खड़ा है और उस तालाव की जगह बहुत अच्छा एक शीशमहल जगमगा रहा है हातिम उस के दरवाज़े पर खड़ा हुआ वहां देखा कि वे सब सुकुमारी अपनी जगह खड़ी हैं यह उन्हें देख प्रसन्न हुआ और वे उस के पास आके पूछने लगीं कि तुम कौन हो कहां से आये हैं उसने कहा कि मैं वह हूं जो तुम्हारे साथ वृक्ष पर लटका था मालिका से मेरा सलाम कहो उन में से एक दौड़ी गई और शहज़ादी से विनती करने लगी कि हातिम नाम एक मनुष्य जो जादू में फंस रहा था अच्छा हो के आया है उसने सुनते ही सिर नीचा कर लिया एक क्षण में सिर उठा के कहा कि अब तक कहां था ऐसा समझ में आता है कि अहमर परबत पर गया होगा शीघ्र जाओ और पूछो वह आके हातिम से पूछने लगी कि अहमर परबत का जो कुछ समाचार जानता है सो कह हातिम ने कहा कि मालिका का बाप महा दुष्ट था सो मारा गया और अपने कुकर्मों से नरक

में पहुंचा इतना तुम से कहा और सब मलिका से कहूंगा उसने जाके वैसे ही कह दिया बादशाह जादी ने सुनते ही आंसू भर लिये वह धीर्य देके कहने लगी कि ऐसे बुरे बाप के लिये दुख करना और रोने का क्या कारण है उसने अपने कुकर्मों का फल पाया और हम तुम उस की कैद से छूटीं अब यह उचित है कि उस को बुला के उस से मिलो इस बात के सुनते ही वह अपना शृंगार कर बन ठन आन वान से जडाऊ तखत पर आ बैठी और उदासीन की भांति बोली कि अच्छा बुलाओ एक सहेली दौड़ी और हातिम को बुला लाई उस की आंख जो मलिका पर पडी तो मूर्छित हो गया और मलिका भी भुचकसी रह गई एक क्षण में आप को संभाल तखत पर से उठ गुलाब का शीशा हाथ में ले हातिम के पास आ उस के मुंह पर गुलाब छिडका अब हातिम को चैन हुआ तब उस अपनी प्राण प्यारी सुकुमारी परम सुन्दरी को सरहाने गुलाब छिडकते देख आनंद में मगन हो गया निदान बादशाह जादी तखत पर आ बैठी और हातिम को जडाऊ कुरसी पर बिठा के अपने बाप का वृत्तांत पूछने लगी हातिम ने सब समाचार कहि सुनाये और कहा कि मैंने तेरे लिये इतना क्लेश सहा अब तुझे भी उचित है कि मेरे मन निवृत्ति की औषधि दे और मेरी आपदा को अपनी कृपा और प्रीति से निवृत्त कर और निराशा की आशा पूर्ण कर इस बात को सुन उसने सिर झुका लिया इतने में हमजोलियों ने कहा कि बीबी हातिम भी यमन का बादशाह जादा है तुम्हारे भाग अच्छे थे जो यह आप ही आप यहां आया तुम जो उस के साथ अपना ब्याह करोगी तो सब भांति से तुम्हारा सुयश और भलाई और अपने बाप के मरने का दुख न करो वह दुष्ट जादूगर था भला

हुआ जो मुझ जंगल का उत्पात मिटा अब विवाह की त-
यारी करना चाहिये मलिका लज्जित हो तख़्त से उठ म-
हल में गई सहेलियां ब्याह की तयारी करने लगीं सात
दिन तक नाच रंग की सभा रही आठवें दिन नवीं रात को
हातिम ने अपनी कुल रीति से मलिका के साथ विवाह-
किया और चित्रसारी में लेजा के मिल बैठा चाहता था कि
साथ सोवै और उस के समागम की मधु पान करै कि मु
नीरशामी का स्मरण हुआ परमेश्वर के भय से कपने ल
गा और मलिका से अलग हो गया मलिका अचम्भे में
हो रही कि उसने मुझ में ऐसा क्या औगुण देखा कि ऐ
से आनंद के मिलाप समय अलग होगया यह कैसे पूछूं
यह सोच के चुप रह गई हातिम ने जब उस चन्द्र मुखी-
को आश्चर्य के समुद्र में डूबा देखा तब कहा कि मेरी प्राण
प्यारी मन रंजनी इतना क्यों घबराई परमेश्वर न करै कि
मेरे जीते जी तुझे कोई दुख हो जो मेरे अलग हो जाने से
चिंता हुई तो ठीक है क्यों कि सूर्य चंद्र में औगुण हैं तु उन-
से भी सुंदर है मैंने परमेश्वर के मार्ग में सिर दिया है मु-
नीरशामी के लिये घर से निकला हूं वह हुस्नबानू पर
आशिक़ हुआ है और हुस्न बानू सात बातें कहती है
जो कोई उस की सातों बातें पूरी करैगा वह उस के
साथ अपना ब्याह करैगी मुनीरशामी उस की एक
बात का भी उत्तर न दे सका तब उसने अपने शहर
से निकलवा दिया वह रोता पीटता कराहता यमन में
आ निकला एक दिन मैं भी शिकार खेलता हुआ उधर
गया अनायास वह मिलगया मैंने उस के समाचार
पूछे उस ने भिखारियों के समान अपना वृत्तांत वर्ण
न किया उस का दुख सुन मेरा जी भर आया और आंसू

टपक पड़े निदान मुझ से उस का दुखी रहना सहा न गया इस लिये उस के साथ शाहाबाद में आया और हुस्न बानू की बातों का पूरा करना अपने सिर लिया उसे कारवां सराय में बिठा के मैंने जंगली राह ली परमेश्वर की कृपा से तीन बातें पूरी कर चुका यह चौथी बात को पूरी करने निकला फिर तुझे देख मेरा मन मेरे बश न रहा और तेरी प्रीति के बाण ने कलेजे में छेद छेद कर दिये कि संसार के सब कामों से रहित हुआ बारे बहुत सी धूर छान के भाग्य बश तू प्राप्त हुई यह अभिलाष है कि तेरे रूप की फुलवारी से आनंद के फूल चुनूं और अपने मन की कली को फुलाऊं पर क्या करूं कि मैंने उस से सौगंद खाई है कि भाई मैं तेरे काम में आलस न करूंगा और जब तक तेरा मनोरथ पूरा न होगा तब तक मुझे भी सुख आनंद महा पाप है इसलिये यह बात भली नहीं कि वह दुख में पड़ा रहै और हातिम आनंद करै इसलिये उचित है कि तुम प्रसन्न होके मुझे बिदा करो कि शाहरखवार जम में जाके उस की चौथी बात पूरी करूं यह सुन मलिका ने कहा कि मुझे कहां छोड़ जाओगे तब तो मेरे बाप के जीते उसका भरोसा था अब कैसे निबाह होगा हातिम ने कहा कि मैं तुझे यमन को भेजे देता हूं मेरा बाप वहां का बादशाह है वह तुझे भली भांति सुखी रक्खेगा तुझे किसी क्लेश की चिंता न होगी उस ने यह बात कह अपने बाप को पत्र लिखा कि प्रभु जो मैं जीता रहा तो यह काम करके आप के चरण समीप आ पहुंचता हूं यहां मैंने मलिका जर्री पोश को ब्याह लिया है सो वह आप के चरण समीप आती है आप उस पर दया कृपा करते रहैं इस पत्र पर अपनी मोहर करके मलिका को दिया वह अपनी सखी सहेलीस हचरी दासियों और फ़ौज सहित यमन को चली और हातिम

शहरखवारज़्म को चला कुछ दिन बीते एक शहर में पहुंचा व
हां जा के लोगों से पूछा कि यह कौन है जो कहा करता है कि
सच बोलने वाले को सदा सुख है उन्हों ने कहा कि यहां ऐसा
कोई नहीं जो यह कहता हो पर एक बूढे ने यही बात जो तु
म कहते हो लिख के अपने दरवाज़े पर लगा दी है हातिम
ने कहा कि उस का मकान कहां है वे बोले कि शहरखवार
ज़्म में यहां से तीन कोस पर है यह सुन हातिम उस तीन प
हर में वहां पहुंच के देखा कि एक मकान बहुत अच्छा और
बड़ा ऊंचा बना है और उस के दरवाज़े पर मोटे अक्षरों से
वही बात लिखी है हातिम उसे पढ प्रसन्न हो दरवाज़े पर
जा ताड़ी बजाई तो कई द्वारपाल दरवाज़ा खोल के बाहिर
आये हातिम को देख कहने लगे कि तुम कौन हो और
किस काम के लिये यहां आये हो हातिम ने कहा कि मैं
एक काम के लिये शाहाबाद से आया हूं द्वारपालों ने यह
सुन दौड़ के अपने मालिक से कहा वह बोला कि मुसाफ़िर
को बुला लो वह मालिक देखने में तरुण और वास्तव में बू
ढा था जब हातिम भीतर गया तो क्या देखता है कि एक पर
म सुंदर मनुष्य बहुत अच्छी मसनद पर तकिया लगाये
बैठा है हातिम ने झुक के उसे सलाम किया वह उठ के मि
ला और बड़े आदर सनमान से अपने पास बिठा लिया औ
र भांति भांति के खाने मंगवा के उस के आगे रक्खे जब खा
ना खा चुके तब हातिम से उस ने पूछा कि तुम कौन हो औ
र कहां से आये हो और किस काम के लिये इतनी बड़ी
दूर बिदेश [illegible] किया और इतना क्लेश सहा सच तो यह है कि
दो मनुष्य बिना यहां कोई नहीं आया उन में का एक तू है यह
सुनते ही हातिम बोला कि मैं यमन का रहने वाला हूं पर शा
हाबाद से मुनीर शामी के लिये तुम्हारे पास तक आया हूं।

निदान मुनीरश्यामी का हुस्न बानू पर आशिक होने और हुस्न
बानू की बातों को पूरा करना अपने सिर लेने का वृत्तांत स
ब विस्तार पूर्वक कह सुनाया फिर पूछा कि आपने अपने
दरवाज़े पर यह लिख के क्यों लगाया है उसने कहा कि
यमन निवासी वीर संसार में तेरा बड़ा सुयश होगा क्योंकि
ऐसा और दूसरा नहीं कि औरों के लिये इतना परिश्रम
और क्लेश सहै तूही ऐसा था जो यह बोझ अपने सिर लिया
आज रहजा कि राह का थका मांदा है कल्ह तुझ से मैं उस
का वृत्तांत कहूंगा हातिम उसरात को वहां रहा दूसरे दिन
खाना खा के कहने लगा कि अब कहिये उसने कहा कि
इस शहर ख़बार उस के बसे हुए सात सौ बरस बीते और
मेरी अवस्था आठसौ बरस की है जैसा तू मुझे देखता है
ऐसाही उस समय भी था जुआरियों में मैं विदित था जु-
आ खेलने से अधिक और कोई काम नहीं करता एकदिन
ऐसा हुआ कि एक पैसा भी मेरे पास न रहा जब रात
हुई तब चोरी को निकला उस समय यह जी में आया कि
किसी छोटे घर में क्या चोरी कीजिये यह भला है कि बादशा
ह के महल में जा के बहुत सा धन रत्न चुरा लाइये मन-
में यह ठहरा के आधी रात को बादशाह के महल पर क
मंद डाल चित्रसारी में जा पहुंच के देखा कि चौकीदारों में
से खवा सखोजा कोई नही जगता और बादशाहभी अ
चेत सोते हैं आगे वह उन के गले से दीप मणि उतार उसी
कमंदपर से उतर किसी ओर चल दिया थोड़ी दूर जा के
देखा कि एक वृक्ष के नीचे बहुत से चोर कहीं से माल चु
रा लाये हैं और बांट रहे हैं उन्हों ने मुझे देख बुला के पूछा
कि तू कौन है कहां से आया है मैं झूठ नही बोलता था उन
से सच सच कहिके वह दीपमणि दिखा दी उस के देखने ही

चोरों को यह लालच हुआ कि उसे मुझ से छीन लेवैं इतने
में एक मनुष्य आकाश से उतर के ऐसे भयानक बोल से
ललकारा कि सब जंगल कांप उठा और चोर अपने प्राण
भय से भाग गये में अकेला वहां खड़ा रह गया वह मेरे-
पास आके कहने लगा कि तू कौन है मैंने पहिलेभी सच क
हा था उस्से भी सच कहि दिया यह सुन वह हंस के कहने
लगा कि तू सच बोला इसलिये यह सब धन इस दीपक म
णि समेत तुझे दिया पर तू चोरी जुआ छोड़ने की प्रतिज्ञा
कर मैंने उस की यह बात मान ली और चोरी करने जुआ
खेलने के छोड़ने की प्रतिज्ञा की तब उसने कहा कि जो
तू जुआ न खेलैगा और चोरी न करैगा तौ तू नौसे बरस
जियेगा यह कहि के वह चला गया मैं उस माल की गठरी
बांध अपने घर लाया और यह मकान बनाया महल्ले के
लोग मेरे वैरी हुए और कोतवाल से कहा कि कल्ह इस के
पास एक कौड़ी भी न थी आज इतना रुपया कहां से ला-
या जो इतना बड़ा महल बनाया इस बात के सुनते ही कोत
वाल ने मुझे बुला के पूछा मैंने उस के सामने भी जो कुछ
सच था वही कहा वह मुझे बादशाह के पास ले गया वहांभी
प्राण का भय न करके सचही बोला यह सुन के बादशाह
ने मेरे ऊपर बड़ी दया की कि यह मनुष्य अद्भुत सत्य वादी
है कि इतना धन रत्न किसी से न छिपाया सच सच कह
दिया उस के सच बोलने पर मैंने यह सब धन उसी को दि
या और उस का अपराध भी क्षमापन किया बादशाह ने-
और धन रत्न इतना मुझे दिया कि मैं सम्पदा से परिपूर्ण-
हो गया उस में से अब भी मेरे पास बहुत है यद्यपि मैंने बहु
त धन उठा डाला उसी दिन से अपने दरवाज़े पर लिख के
लगा दिया है कि सच बोलने वाले को सदा सुख है यह कह

के उसने हातिम से पूछा कि सच कहु तू कौन है उस ने कहा कि मैं तै का बेटा हातिम यमन का बादशाह जादा हूं यह सुनते ही वह अपनी मसनैद से उठ के मिला और बड़ी प्रतिष्ठा कर के बोला कि सच है हातिम बिन कौन ऐसा काम कर सकता है फिर कई दिन उसे अपने यहां मह्मानी में रक्खा फिर हातिम ने कहा कि प्यारे मुझे अब बिदा कर मुझे एक काम बहुत अवश्य है उसने बड़े आदर सन्मान से बिदा किया वह अपनी मन वांछित जगह को चला सात दिन चला जाता था एक दिन मलिका जरी पोश का स्मरण हुआ मन में आया कि मलिका को देखना हुआ शाहाबाद को जावें यह बिचार यमन की ओर चला कुछ दिन में यमन के पास जा पहुंचा प्रसन्न हो एक तालाव पर बैठ गया उस के किनारे एक तोते का जोड़ा बैठा आपुस में बातें कर रहा था हातिम उसी ओर कान लगा के सुनने लगा कि देखो ये क्या कहते हैं तोती ने तोते से कहा कि तू मुझे अकेली छोड़ के कहां जाता है परमेश्वर के लिये न जा तोते ने कहा कि अरी मूर्ख तू भले काम में क्यों बाधा करती है क्या तू परलोक में मेरे काम आवैगी जो परलोक के काम छोड़ लोक के काम में फंसा रहूं तू नहीं सुना कि एक बादशाह किसी दिन शिकार खेलने निकला बहुत फिरा पर कोई शिकार हाथ न लगा और साथियों से छूट एक जंगल में जा पड़ा उस जंगल में एक रमणीक सुहावना बाग देख उस में गया और आनंद से सैर करता करता एक बंगले के पास जा पहुंचा वहां एक कुंड तालाव के समान निर्मल जल से भरा देख उस के किनारे बैठ हाथ से पानी उछालने लगा इतने में एक जंजीर उस के हाथ में आगई उसे जो पकड़ के खींचा तो एक

सन्दूक ताला लगी हुई ताली समेत निकली बादशाहने
जो संदूक खोली तौ एक परम सुन्दर सुकमारी कांता को
उस में बैठा पाया उसे देख बादशाह डर गया उसने क
हा क्यों डरते हौ में भी मनुष्य हूं यह कह के संदूक से नि
कल सुराही पियाला गज कला के बादशाह के सामने
रख भोग बिलास की अपेक्षा की बादशाह ने जी में
कहा कि सुंदर स्त्री और सब आनंद की बस्तु प्राप्त हैं
इसे न छोड़ा चाहिये यह विचार मद्य पान और उसेंभो
ग कर उठ खड़े हुए और उंगली से एक अंगूठी उतार उ
से दी कि मेरी निशानी अपने पास रख जो कभी फि
र मिलैं तो मुझे भूल न जाय वह खिल खिला के हंस प
ड़ी और अंगूठियों की एक थैली निकाल बादशाह को
दिखला के कहने लगी कि परमेश्वर सब गुप्त प्रगट का
साक्षी है सच तो यह है कि मेरे पति ने रक्षा के लिये मुझे
जंगल में इस बाग़ के भीतर संदूक में बंद कर इस कुंड
में लटका दिया है और आप सौदागरों के साथ सौदाग
री करता फिरता है और मेरे खाने पीने को भी सब बस्तु
यहां प्राप्त है किसी बस्तु की घटती नहीं जो कभी कोई मु
साफिर भूला भटका क्या बादशाह क्या सौदागर तेरेही
समान इस बाग़ में आ जाता है तो ऐसे मुझे संदूक से नि
काल और भोग कर अंगूठी दे चला जाता है सौ थे बह
तसी अंगूठियां मेरे पास हैं पर मैं नहीं जानती कि कौन
किस की है ऐसे ही अंगूठी और तुझे भी भूल जायगी क्यों
कि जो एक दो हों तो स्मरण रहै सैकड़ों हजारों का क
हां तक ध्यान रहै इस बात को सुन बादशाह अचम्भे
में हो उसे संदूक में बंद कर वैसे ही ताला दे में लटका ल
श कर साथ ले शहर में आ के सब धन संपति राज-

पाद लुटा के आप जंगल में निकल गया और एकान्त
में बैठ परमेश्वर के भजन स्मरण में लौलीन हुआ और
जब तक जिया स्त्री का नाम भी न लिया अरी मूर्ख तू मे
रे साथ क्या भलाई करैगी जो धर्म के काम से मुहं रो
कती है देख हातिम ने भी परमेश्वर के लिये तो परोपकार
पर फ़ैंट बांधी है और कैसे कैसे दुख सहि के कुछ कुछ
सुयश पाया सो स्त्री का स्मरण कर शाहाबाद का मार्ग
छोड़ उस्से मिलने के लिये यमन को जाता है बड़े सोच
की बात है कि वह अपने परिश्रम को धूर में मिला-
ता है हातिम ने यह बात सुन परमेश्वर का धन्यवाद क
र यह बात अपने मन में पत्थर की लकीर की कि य
ह शब्द परमेश्वर की ओर से आता है अब मेरे लिये
इसी में भलाई है कि यमन की ओर पैर न रक्खों और
शाहाबाद का रस्ता पकड़ूं यह बात मन में ठहरा शा
हाबाद को चल दिया बहुत दिन बीते वहां जा पहुंचा लो
ग उसे पहिचान के हुस्न बानू के पास ले गये वह भीत
र बैठ हातिम को बुलवा परदे के बाहर बैठाल के समा
चार पूछे हातिम ने पहिले अपने मार्ग के क्लेशों का
वरणन किया फिर उस वृद्ध मनुष्य की वार्त्ता सम्पूर्ण
ठीक ठीक कह सुनाई हुस्न बानू ने कहा कि जो तुम क-
हते हो सो सच है इस में कुछ सन्देह नहीं फिर बहुत-
स्वादिष्ट खाना मंगवा के हातिम के सामने रखवा दिया
उस ने कहा कि मैं सराय में जाके अपने भाई के सा-
थ खाऊंगा यह कहि के वहां से उठ सराय में आया
और मुनीरशामी से मिल के एक साथ खाना खाया औ
र सब वार्त्ता कही यह सुन मुनीरशामी ने हातिम को ध
न्य धन्य कहि दोनों सुख पूर्वक सोये प्रातःकाल हातिम

न्हाइ धोइ कपड़े बदल हुसनबानू की डेवढी पर आया चोब-
दारों ने जा कहा कि हातिम आया है उस ने उसे परदे-
के भीतर बुला एक कुरसी पर बिठा के कहा कि सुन्ने में
आता है कि एक पहाड़ से शब्द आता है इस्से उस का को
हनिदा नाम है अब उस के समाचार ला कि वहां पुकारने
वाला कौन है और परबत के उधर क्या है यह सुन हातिम
वहां से बिदा हो सराय में आ के मुनीर शामी से कहा कि
कोहनिदा के समाचार लाने जाता हूं जो जीता बचा तो
उस का निश्चय कर फिर तुझ से आ मिलूंगा नहीं तो पर
मेश्वर की इच्छा पर तू किसी बात की चिंता न करना ॥+

पांचवी कहानी में कोहनिदा के समाचार लाने का बरणन है॥

हातिम दो चार बातें सिखावन की मुनीर शामी से
कहि के जंगल की ओर चला जिस बस्ती में जा निक-
लता वहां के लोगों से पूछता कि तुम में से जो कोई-
कोहनिदा का रस्ता जानता हो तो मुझे बता दे यह बात
सुन लोग अचम्भे हो हो कहते कि भाई हम इतने बड़े
हुए उस का नाम भी नहीं सुना रास्ता जानना तो एक
ओर हातिम अपने साहस से बे देखे सुने मार्ग में चला-
जाता था एक महीना बीते किसी शाहर की ओर जा नि
कला तो क्या देखता है कि उस शाहर के स्त्री पुरुष जंग
ल में इकट्ठे हैं वह उन की ओर चला उन्हों ने जो देखा-
कि एक मनुष्य चला आता है सब के सब इस की ओर-
देख पुकार के कहने लगे कि वाह वाह अरे बटोही जो
तू यहां आया तो भला हुआ हम तेरा रस्ता देख रहे हैं-
हातिम ने आगे जा के देखा कि भांति भांति के खाने ध
रे हैं और एक मुरदे को लोग घेरे हुए बैठे हैं हातिम ने

पूछा कि इस मुरदे को क्यौं नही गाड़ते ऋौर इतना क्यौं-
रोते हौ उन्हों ने कहा कि हमारी जाति की यह चाल है
कि जो कोई धनवान वा दरिद्री मरता है तब हम सब उ-
स मुरदे को जंगल में ला के बहुत सुथरे खाने पका ए-
क कपड़े के ऊपर चुन के सुला फिर का रक्ला देखते हैं
उस बीच जो कोई मुसाफ़िर ऋागया तो खाना उस के
ऋागे रख देते हैं सो इस मुरदे को सात दिन हुए कि ऐसा
ही यहां पडा है ऋौर कोई मुसाफिर इधर नही ऋाया हम
बडे क्लेश में थे कि नित्त खाना सांझ समय ऋपनी स्त्रियें
को भेज देते थे ऋौर ऋाप यहां पडे रहते धन्य परमेश्वर
कि ऋब सातवें दिन तुम देख पड़े ऋब इसे गाड़ेंगे भी-
ऋौर खाना भी खायेंगे हातिम ने पूछा जो एक महीने त-
क कोई मुसाफिर न ऋावै तो मुरदे की क्या दसा हो ऋौर
तुम्हारे प्राण कैसे रहैं उन्हों ने कहा कि यह बात सत्य है
पर सातवें दिन कहीं न कहीं से कोई मुसाफिर ऋा ही र-
हता है जो कभी पंद्रह दिन तक न ऋाया तो सारे दिन ब्रत
करते हैं सांझ को केवल पानी पी लेते हैं ऋौर मुरदा भी ए-
क महीने तक नही सड़ता फिर हातिम ने कहा कि जो एक
महीने से भी ऋधिक बीते तब तो दुर्गंध ऋावैगी उस समय
क्या करौगे उन्हों ने कहा जो ऐसा हो तो मुरदे को गाड दें-
ऋौर सब स्त्री पुरुष छः महीने तक दिन भर ब्रत कर के
सांझ को परमेश्वर से ग्लान पूर्वक विनती करैं ऋौर खा-
ना परोसियों को बांट दें फिर मुरदे की क़बर पर जा के ब-
हुत सा दान पुण्य करैं तब ऋपना ऋपना काम करने ल-
गें हातिम यह सुन ऋचम्भे में हुऋा ऋौर उन्हों ने तहख़ा-
ने में ऋच्छा बिछौना बिछा उस पर मुरदे को लिटा दिया
ऋौर भांति भांति के ख़ाने रक्खे सुगंध की बत्तियां जला के

सात वार मुरदे के पैर चूम बाहिर निकल आये और खा
ने के पास जा बैठे और हातिम से कहा कि भाई मुसाफि
र पहिले खाने में तू हाथ डाल और पेट भर खा कि मुर
दे को पहुंचे और तेरी कृपा से हम भी व्रत खोलें यह बा
त सुन हातिम खाना खाने लगा फिर सबने खाया जो
बचा सो घर भिजवाया वे सब न्हाइ के कपड़े बदल अ
पने घर चले और हातिम से कहा कि जो तुम्हारा जी चाहै
तो हमारे यहां कुछ दिन मेहिमान रहो हातिम बोला कि
बहुत भला तुम्हारी प्रसन्नता के लिये दो चार दिन रह स
कता हूं निदान उसे शहर में ले गये और एक सुथरासा
मकान उस के रहने को दिया और खाने पीने की वस्तु
सुंदर सुंदर लौंडियों समेत भिजवादीं हातिम ने अपने
मन में कहा कि यहां की बहुत अच्छी रीति है जो मैं इन का
मों से अब काबू पाऊं और परमेश्वर मेरा मनोरथ पूरा
करे तो मैं भी अपने शहर में जा के ऐसे ही मुसाफिरों का
आदर करूंगा और वे स्त्रियां यह अभिलाष करती थी
कि इस मनुष्य का मन हम में से जिस को चाहै उस के सा
थ आनंद पूर्वक भोग विलास करै पर हातिम ने किसी की
ओर आंख भर के देखा भी नहीं भोग करने की तो काम-
चरचा जब सात दिन बीत गये तब उन स्त्रियों ने अपने
सरदारों से हातिम की भलाई बरणन की शहर के रईस
ने हातिम को अपने सामने बुलवाया और बड़े आदर-
सनमान से मसनद पर बिठा के कहा कि जो तुम इस शा-
हर का रहना अंगीकार करो तो बड़ी कृपा है और मैं अ-
पनी बेटी तुम्हारी सेवा के लिये दूं हातिम बोला कि मुझे
एक काम बड़ी आवश्यकता का है इस्से बे वश हूं नहीं
तो रहता यह सुन के उस ने कहा कि जो वह काम मुझे

जताओ तो मैं भी साथ दूं हातिम ने कहा कि मैं यह नहीं चाहता कि कोई मेरे साथ क्लेश सहै वह बोला कि जो साथ नही लेता तो यही कहि दे कि वह ऐसा क्या काम है हातिम ने कहा कि एक हुस्नबानू नामी परम सुंदर स्त्री है वह सात बातें पूछती है जो कोई इन सातों के उत्तर दे उसी से वह अपना ब्याह करे मुनीरश्शामी उस का आशिक़ उस के बिन वह नही जी सकता है न उसे उस की बातें पूरी करने की सामर्थ्य है हुस्नबानू के विरह में जंगल जंगल रोता फिरता था एक दिन मुझे मिल गया मैं उसे दुर्दशा में फिरते देख बहुत दुखी हो के रो दिया और यह क्लेश न सहि सका अपने शहर से निकल बिदेश किया परमेश्वर की कृपा से उस की चार बातें पूरी कर चुका यह पांचवी बात की बारी है वह यह बात है कि कोहनिदा के समाचार लाना चाहिये उसी के खोज में छः महीने बीत गये हैं जिस्से पूछता हूं कोई नही बताता जो आप जानते हों तो उस का पता बता दीजिये मानो आपने साथ दिया और सहाय की यह बात सुन उस वृद्ध मनुष्य ने कहा कि मैंने अपने बुज़र्गों से सुना है कि दक्षिण की ओर एक मायाजाल है उस के बाईं ओर एक बड़ा शहर बसता है वहां आज तक किसी ने मुरदा नही देखा न क़बर देखी न कोई किसी के लिये रोता है यह वार्त्ता सुन हातिम बोला कि मुझे उसी ओर जाना है उसने कहा कि प्यारे सुने हुए मार्ग में कैसे चलैगा और मन वांछित स्थान में किस भांति पहुंचैगा हातिम ने कहा कि जो मुझे यहां लाया है वही वहां पहुंचावैगा इस बात को सुन उस प्राचीन मनुष्य ने बहुत सा धन रत्न हातिम के सामने रख दिया उस में से हातिम ने राह खर्च के योग्य आप लिया रहा सो पुण्य कर उसी ओर का

रस्ता लिया बहुत दिनों में एक शहर के पास जा पहुंचा
उस के आस पास कोई क़बर न देखी जाना कि वह श
हर यही है जब शहर में गया तब वहां के रहने वालों ने
पूछा कि तू कहां से आया है और कहां जायगा हातिम ने
कहा कि शाहाबाद से आया हूं कोह निदा को जाऊंगा उ
न्हों ने कहा कि कोह निदा का रस्ता यहां से बहुत दूर है तू
नहीं जा सकेगा हातिम ने कहा कि जो मुझे यहां लाया है
वही सर्व सम्मर्थ वहां भी पहुंचा देगा उन्हों ने कहा कि आ
ज की रात तू यहीं रहजा हमारी दाल रोटी अंगीकार क
र हातिम यह सुन वहीं उतर रहा यहां एक मनुष्य कित
ने दिनों से बेराम था उस के कुटुंबियों ने उसे मार उस
का मान्स आपुस में बांट लिया और जिसने हातिम को
अपने यहां उतारा था अपना हिस्सा पका के एक कटो
रा पानी की चार रोटियों समेत सांझ समय हातिम के
पास ला के कहने लगा कि अरे बटोही इस को खा कि
ऐसा खाना कभी न खाया होगा हातिम ने कहा कि-
जितने पशु पक्षी भक्ष्य हैं सब मैं ने खाये हैं यह किस का
मान्स है जो मैं ने कभी नहीं खाया उस ने कहा कि तूनें पशु
पक्षियों का मान्स खाया होगा यह मनुष्य का है सो कभी
न खाया होगा हातिम बोला कि तुम मनुष्य भक्षी हो तु
म से डरा चाहिये तुम ने किसी मुसाफिर को मारा है
उस का मान्स खाया चाहते हो मैं ने जाना कि तुम्हारी
यही रीति है कि जो कोई भूला भटका यहां आ निकल
ता है तुम उसे मार के आपुस में उस का मांस बांट-
खाते हो वह बोला कि अरे मुसाफिर परमेश्वर से डर हम
मुसाफिर को नहीं मार खाते हातिम ने कहा कि बड़े अचंभे
की बात है कि तू आपही कहता है कि यह मनुष्य का मांस है

तो कोई अपने जाति वाले को नहीं मार खाता पर दूसरे को तब वह बोला कि तू यह झूठ समझा है हमारे देश की यह रीति है कि जो कोई बेराम पडता है तब उस के कुनबे के लोग उसे मार के उस का मांस आपुस में बांट लेते हैं इसी से हमारे शहर मे कोई अपनी मौत से नहीं मरता और कबर भी नहीं बनती हातिम ने यह बात सुन के कहा कि धिक्कार तुम्हारी रीति और तुम्हारे शहर को परमेश्वर सर्व समर्थ है रोगी को आरोग्य और आरोग्य को रोगी करता है तुम जो रोगी को मार के खा जाते हो इस कुकर्म की चाल किसी जाति में नहीं यह क्या अन्याय है इस कर्म से तुम सब के सब पापी हो और हजारों के बध का पाप तुम लोगों के सिर पर है। तुम्हारा मुंह न देखना चाहिये यह कह उठ खडा हुआ और जंगल की ओर चला थोडी दूर जा के देखा कि एक बाघ भूख के मारे धरती पर पडा तलफ़ रहा है यह उस की दसा देख हातिम ने एक हिरन मार के उस बाघ के आगे डाल दिया वह पेट भर खा के जंगल को चला गया हातिम ने भी कबाब खा और एक ताला ब पर जा पानी पी परमेश्वर का धन्य बाद कर आगे चला ऐसे ही जब किसी जंगल में अन्न वा कोई फल न मिलता तब किसी भक्ष्य जीव को मार उस का मांस खाता कुछ दिनों में एक बस्ती देख पडी उस की ओर चला जब पास पहुंचा तो देखा कि बहुत से लोग बस्ती के बाहिर आग जला के उस के ओर पास खडे हैं हातिम ने बढ के उन से पूछा कि यह कौन देश है और तुम कौन हो और इतनी लकड़ियां इकट्ठी कर आग क्यों जलाई है उन्हों ने कहा कि अरे भिखारी तू अपने रस्ते चला जा इस के पूछ

ने से तेरा क्या प्रयोजन है यहां रसोई नहीं होती जो हम
तुझे कुछ देवें आज हमारी जाति का एक मनुष्य मरग
या है उस की स्त्री उस के साथ जला चाहती है हातिम ने
कहा कि इस मुरदे को धरती में क्यों नहीं गाड़ते और इ-
स स्त्री को जीते जी क्यों जलाते हो उन्हों ने कहा कि हम
ने जाना कि तू इस देश का रहने वाला नहीं यह हिंदुस्तान
देश है यहां की यही चाल है कि स्त्री अपने पति के साथ
प्रसन्नता से जलती है हातिम ने कहा कि मुरदे के साथ-
जीते जी को जलाने की रीति बहुत बुरी है यह कह वहां
से चल किसी गांव में जा पहुंचा वहां एक मनुष्य से पानी
मांगा वह एक कटोरा दूध और एक कटोरा मट्ठा लाया।
और कहा जो तेरा जी छाछ को चाहे तो छाछ और दूध-
पर मन चले तो दूध पी ले हातिम ने पहिले मट्ठा पी लि
या फिर दूध का कटोरा मांगा उस ने दूध में थोड़ी चीनी डा
ल के वह कटोरा भी दे दिया और कहा कि अरे बटोही इ
स समय मेरे घर में बहुत अच्छे बांसमती चावल पके
पकाये तयार धरे हैं जो तू कहे तो ले आऊं उन के साथ
खा बड़ा स्वाद मिलेगा हातिम ने कहा बहुत भला भल
ई का क्या पूछना और अपने मन में उस की उदारता+
को सराहता था वह एक थाली में मीठा भात ले आया
हातिम ने उसे स्वाद से खाया और उस रात को उसी गां
व में रहा भुरू होते ही उस की स्त्री ने आ के कहा कि रसो
ई तयार है भोजन करो और दो चार दिन यहीं रहो+
जिस में मार्ग का खेद दूर हो जाय यह सुन हातिम ने
उन दोनों से कहा कि तुम्हारी इस उदारता और बटोही-
के पालन पर धन्य धन्य है यह सुन वे बड़ी दीनता से बो
ले कि हमने तुम्हारी सेवा क्या की यह अपना घर में लड़के

वालों के लिये बना था वही हमने साधारण ला दिया था
जो दो तीन दिन रहो तो अपने सावकाश भर तुम्हारी सेवा
करैं हातिम ने कहा कि बहुत अच्छा मैं तुम्हारे मन रखने
के लिये दो चार दिन रहूंगा यह सुन वे प्रसन्न हुए फिर उ-
सने एक मकान में बहुत सुथरा पलंग बिछाया और उस
के आगे अच्छा बिछौना भी बिछा दिया और भांति भांतिके
खाने पकवा के उस के आगे रख बोले कि इस में कुछ-
भोजन करो तो बड़ी कृपा है हातिम ने ऐसे खाने तो कभी
खाये न थे उन को खाके बहुत प्रसन्न हुआ और बहुतसी
आधा कर उन से कहने लगा कि यह हिन्दुस्तान देश अ-
द्भुत फुलवारी है पर यहां की यह चाल बहुत बुरी है कि-
जीती स्त्री को मरे पति के साथ जला देते हैं यद्यपि पुरुष
का भी जलाना बुरा है यह बात सुन वह बोला कि तुमने
सच कहा परंतु स्त्री पुरुष में परस्पर बड़ी प्रीति होती है व
ड़ा सोच है कि पुरुष मर जाय और स्त्री जीती रहै हम ब
लात्कार से नहीं जलाते वह अपनी प्रसन्नता से जलती हैं
जो थोड़े दिन रहो तो हम तुम्हें दिखलादें हातिम वहां र
हा इतने में वहां का रईस दो चार दिन बेराम हो के मर-
गया उस के चार स्त्रियां थी और पहिली का एक लड़का
भी था जब उस की रथी बना के ले चले तब वे चारौं अप
ना सुंदर सिंगार कर फूलों के हार पहिन बाल बखेर सा
थ हो लीनी कुनबे के लोगोंने उन के पैरों पर गिर के कह
कि तुम भरी पूरी हो तुम्है जलना नहीं चाहिये उन्होंने कि
सी का कहना न माना तब हातिम उन के पास जाके क
हने लगा कि तुम्हें लाज नहीं आती जो अपने घर से नि-
कल अनजानतों में आके मरैं मनुष्य के साथ जला चा-
हती हो वे हंस के बोली कि ओ विदेशी तुझे हमारे देखने से

लाज़ नहीं ग्राती हम तो मरी हुई हैं हम को लाज की कुछ सुधि नहीं क्योंकि वह कौन सा दिन था कि इस मुरदे के साथ भोग बिलास चैन सुख किये थे ग्रब जो वह मर गया तो हम उस के बिना जीती रहैं इस बात में प्रीति ग्रौर शील ग्रौर धर्म ग्रौर न्याय का विरोध होता है उस्से ग्रधिक जब तक जीती रहैंगी बिरह की ग्रग्नि में जलना पडैगा इस्से यही भला है कि एक ही बार उस के साथ जल बुझैं ग्रौर सदैव की बिरह ग्रग्नि से छुटें ग्रागे परमेश्वर जाने ग्रौर इस बात से भी जी डरता है कि कहीं कामदेव हमारे मन को न भ्रमावै कि जिस्से हम ग्रपने स्वामी को भूल के किसी की ग्रौर कुदृष्टि से देखैं ग्रौर ग्रपना धर्म खोवैं ऐसे जीने पर धिक्कार है निदान उन्होंने हातिम का भी कहना न माना ग्रौर बावली सी इधर उधर देखती भालती चिता तक जा पहुंचीं फिर उस मुरदे को चिता में रख दिया ग्रौर वे हंसती हुई उस की परिक्रमा दे किसी ने उस का सिर जांघ पर धर लिया किसी ने पैर गोद में ले लिये फिर लोगों ने सहसा चिता में ग्राग लगादी हातिम ने जाना कि ग्राग की ग्रांच से वे डर के भाग जायंगी पर यह उस की समझ झूठी थी वे हंसती हंसती उस के साथ जल के भस्म हो गईं हातिम यह वृत्तांत देख घबराया ग्रौर पछताने लगा जब लोग ग्रपने घरों को चले तब हातिम भी उन के साथ चला ग्राया तब जिसके घर में ठहरा था उस ने कहा कि तू ने देखा कि स्त्रियां अपने ग्रभिलाष से जलती हैं कि कोई उन्हें बलात्कार से जलाता है ग्रौर प्रीति की रीति यही है हातिम बोला तुम सच कहते हो प्रेम का निबाहना यही है कि उस के पीछे बिरह की ग्रग्नि में न जलैं

क्यौंकि वह आग इस आग से बडी कठिन है निदान क
ई दिन पीछे हातिम ने कहा कि प्यारे मुझे कोहनिदा की
ओर जाना है अब बिदा कर यह बात सुनि उस ने कहा कि
कोहनिदा यहां से बहुत दूर है तू पहुंच न सकैगा हाति
म ने कहा कि परमेश्वर बडा समर्थ है वह पहुंचा देगा
यह उन से बिदा हो देश देश गांव गांव देखता हुआ उत्त
र की ओर जा पहुंचा तो एक शहर दिखाई दिया जब उ
स के पास जा पहुंचा तो देखा कि बहुत से लोग इकट्ठे
हैं और चिल्लाहट पड रही है उन से जा के पूछा कि य
ह हल्ला क्यौं मचा है किसी ने कहा कि यहां के रईस की बेटी
मर गई है हम चाहते हैं कि इस के पति को भी इस के स
थ जीता गाड दें वह यह बात नहीं मानता इस लिये यह
चिल्लाहट पडी है हातिम ने कहा कि तुम मुझे अपने
रईस के पास ले चलो मैं उस्से कुछ कहूंगा यह सुन वे
उसे रईस के पास ले गये हातिम ने रईस से कहा कि
तुम्हारी यह क्या चाल है जो मुरदे के साथ जीते को गाड
ते हैं और वह प्रसन्न नहीं तुम परमेश्वर से नहीं डरते-
वह बोला कि वह भी तेरी ही भांति इस शहर में आया था
कुछ दिन यहां रह के मेरी बेटी को चाहने लगा और-
परपर हम लोगों में मिल गया और इस शहर की यह
रीति है कि जब तक लड़की वा लड़का तरुण न हो जाय
और सुध न सभा लैं तब तक हम लोग अपने मन से
उन का ब्याह नहीं करते जब तक उन के आपस में
प्रेम प्रीति न हो जाय यहां तक कि दोनों प्रसन्न होके
प्रतिज्ञा करें कि जो हम में से मर जायगा तो उस के
साथ दूसरा जीते जी गड़ैगा तब हम दोनों को ब्याह देते
हैं यह मनुष्य भी हमारी चाल को समझ बूझ इस लड़की

पर आशिक हुआ था जब उन दोनों में पूरी प्रीति देखी
तब मैं उन को प्राहर के हाकिम के पास ले गया हाकि-
म ने उन से कहा कि हमारी यह चाल है कि जो पुरुष म
र जाय तो स्त्री को जो स्त्री मर जाय तो पुरुष को उस के सा
थ गाड़ देते हैं इस बात को दोनों ने अंगीकार किया तब
हमने उन्हें व्याह दिया यह कौन सा न्याय है बहुत दि-
नों तक उस के साथ सुख चैन किया और उस के यौ
वन की फुलवारी आनंद के फूल लूटे अब जो वह मर गई
है तो यह अपनी प्रसन्नता से उस के साथ क्यौं नहीं गड़
ता और अपनी प्रतिग्या को क्यौं नहीं पालना करता इस
में हमारा क्या अपराध है कुछ हम बलात्कार से नहीं गा
ड़ते जो उस की प्रतिग्या बिन हम उसे गाड़ दें तो अन्या
य है तू ही पूछ देख कि यह अपनी बात से क्यौ फिरा जा
ता है और अपना कहा क्यौं नहीं निबाहता यह सुन हाति
म उस पुरुष के पास गया और कहने लगा कि तू कि
स लिये अपनी बात नहीं निबाहता कब तक जियेगा।
अंत को एक दिन मरना है यही भला है कि जो तू ने क-
हा है उस का निबाह कर वह बोला कि अरे बिदेषी।
तू भी उन्हीं में मिल गया जो यह बात कहता है तू अपने
प्राहर की रीति क्यौं नहीं बरणन करता हातिम ने कहा
कि मैं क्या कहूं तू आप ही प्रतिग्या कर चुका है अब फिर
ने से तुझे लाज नहीं लगती उस ने कहा कि यह कभी
न होगा जो मैं इन का कहना मानों और जीते जी इस
मुरदे के साथ गडूं हातिम ने जाना कि ये सब के सब
उसे बे गाड़े न रहैंगे और यह अपनी प्रसन्नता से न
गड़ेगा इस बात को विचार उस्से अपनी बोली में कहा
कि तू चिंता मत कर मैं किसी न किसी भांति तुझे क़बर

से निकाल लूंगा पर अब उन के सामने तू गड़ जा उसने
कहा कि जो मैं गड़ जाउंगा तो तेरे निकालने के समय
तक कैसे जीता रहूंगा फिर हातिम ने उसे धीरज दे उन
लोगों से कहा कि यह मरन हार अपनी बोली में कहता
है कि जो मेरे शहर की रीति से कोठरी सी कबर बनावें
गे तो मैं अपनी प्रसन्नता से गड़ जाउंगा यह सुन वे।
कहने लगे कि यह बात हाकिम के आधीन है हम कु
छ नहीं कर सकते जो वह कहेगा सो करैंगे हातिम उन
सभों को हाकिम के पास ले गया वे सब के सब कहने
लगे कि प्रभू यह गड़ना अंगीकार नहीं करता पर यह
कहता है कि जो मेरे शहर की ऐसी कोठरी के समान।
कबर बनाओगे तो मैं गडूंगा हाकिम ने पूछा कि उस
के शहर में कैसी कबर बनती है हातिम ने कहा कि बड़ी
कोठरी सी जिस में दस बीस मनुष्य लेटैं बैठें यह बात
हातिम के मुंह से सुनते ही हाकिम ने सिर झुका लिया
फिर एक क्षण में सिर उठा के बोला कि वह जैसी कबर
बनाने को कहता है वैसी ही बना दो कि वह अपनी प्रस
न्नता से गड़ जावे यह सुन के वे लोग फिर आये और
एक कबर वैसी बनाई तब हातिम ने लोगों की आंख ब
चा के उस मनुष्य से कहा कि तू चिंता मत कर मैं रा-
त को तुझे कबर से निकाल ले जाउंगा उसने हातिम-
का कहना मान लिया और बोला कि अरे मित्रो अब वि
लंब न करो जो तुम किया चाहते हो सो मुझे अंगीकार
है निदान उन लोगों ने उन दोनों को उस कबर में गाड़ औ
र एक पत्थर से उस का मुंह बंद कर हातिम समेत अ
पने शहर को गये और हातिम को खिला पिला एक सु
थरा सा मकान सोने को दिया पर हातिम रात होने की

राह देखता था कि किसी प्रकार उसे कबर से निका-
लें जब रात हुई और घर वाले सब सो रहे तब हातिम
बिछौने पर से उठ उस गोर की ओर गया उस देश की
यह रीति थी कि तीन दिन तक मुरदे की कबर पर उस
के घरवाले जगा करें और घर न आवें और स्त्रियों का
मुंह न देखें इस्से हातिम ने तीन रात घात न पाई फिर
फिर आया चौथी रात को लोग अपने अपने घर आ
ये हातिम उठ के उस गोर पर गया और वह मनुष्य
गोर में हातिम को इस प्रकार बुरा भला कहिके रो रहा
कि वह बिद्वेषी बडा रूठा और छली था जो मुझे छल से
गोर में गडवा गया मैंने आप बुरा किया जो ऐसे का
कहा माना और उस की बात को सच जाना इस में
किसी का दोष नहीं अपना किया अपने आगे आया
निदान हातिम ने अपना मुंह नाव दान पर रख पुका-
रा कि मैं तेरे निकालने को आया हूं उस ने उत्तर न दि
या हातिम ने जाना कि वह मर गया फिर पुकारा तब
भी न बोला तब तो हातिम को निश्चय होगया कि वह
जीता नहीं है बहुत पछिता के रोया फिर तीसरी बार पु
कार के कहा कि जो जीता हो तो बोल नहीं तो प्रलय
पर्य्यंत इसी गोड में पड़ा रहैगा मैं अपना कहना पूरा
कर चुका यह सुन वह चौंक पडा और सुना कि कोई
पुकारता है उठ खडा हुआ और नाव दान के पास आके
कहने लगा कि तू कौन है जो पुकारता है हातिम ने जो
उस की बोली सुनी परमेश्वर का धन्य बाद का प्रणाम
कर बोला कि मैं वही हूं जिसने तुझे यहां से निकालने
को कहा था यह कहिके छुरी निकाल नावदान खोद+
उसे निकाल खाना खिला के कहा कि अब जिधर तेरा

मन में आवे उधर चला जा उस ने कहा कि मेरे पास राह खर्च नहीं हातिम ने कुछ खर्च राह उसे देके बिदा किया और आप उस नावदान को वैसाही बना के अपनी जगह पर आके सोरहा जिस में कोई न जाने इतने में प्रातःकाल हुआ तब उठके उन लोगों से कहने लगा कि मुझे कोह निदा के समाचार लेने जाना है विदा करो उन्हों ने कहा कि कोह निदा यहां से बहुत समीप है अच्छा जाइये पर इतनी बात स्मरण रखना कि थोडी दूर चल के एक दुराहा मिलेगा तुम दाहिने ओर की राह में जाना निश्चय है कि वहां पहुंच जाओगे हातिम उन से विदा हो सात दिन रात चला गया ग्यारवें दिन उस दुराहे पर जा पहुंचा और वह बात भूल के बांई ओर चल निकला बडा सोच है कि जिस राह की उसने नाहीं की थी उसी में चला दो दिन बीते देखा कि सब जीव पशु घाती भागे चले आते हैं हातिम एक कोने में खडा हो देखने लगा कि कोई ऐसा बडा जीव पशुघाती इनके पीछे पडा है जो ये इतना जी छिपाये गिरते पडते चले आते हैं यह समझ के एक वृक्ष पर चढ गया तब देखा कि बडे बडे मत्त हाथी और गैंडे भी घबराये चले आते हैं उन के पीछे एक महा भयानक छोटा सा जीव दीपक सी आंखें पूछ सिर पर छत्र किये चला आता है हातिम डरा कि यह कोई बडी व्याधि है कि जिस के डर से इतने इतने बडे पशु घाती जीव भागे चले आते हैं मैं किस गिनती में हूं फिर अपना मन दृढ करके छुरी निकाल सन्नद्ध होके बैठा इतने में वह जीव उसी वृक्ष के नीचे आया और मनुष्य की गंध पा गुर्री के उछला चाहा कि हातिम को पकड के चीर डालें पर हातिम ने एक छुरी ऐसी मारी कि दोनों हाथ कट गये

फिर वडा क्रोध कर लपका तव हातिम ने उस के पेट में-
छुरी मारी कि अंतडियां निकल पडीं और वह धरती पर
गिर पडा गिरते ही मूत्र कर उस में पूछ भिगो के हिलाने
लगा जहां जहां उस की बूंदें पडीं वहां वहां आग लग
गई जब उस वृक्ष के पास आग आपहुंची तब हातिम
कूद के एक तालाव में जा पडा और वह जीव मरगया
जव आग बुझ गई तव हातिम पानी उछाल बाहेर निक
ल उसी वृक्ष के पास आके उस जीव के चार दांत जो
छुरी समान तीक्षण थे उखाड़ लिये और पूछ दोनों-
कानों समेत काटली फिर तरकश में रख आगे चला-
कई दिन पीछे दूर से एक क़िला दिखाई दिया तव उ
सी ओर चला जब पास पहुंचा उसे सुन सान पाया
और उस के कंगूरे आकाश से लगे देखे जव उस के-
ऊपर गया तो देखा कि वडे बडे मकान शीश महल-
से चमक रहे हैं और चौपड़ का बाजार वहुत सुथरा
अति स्वच्छ वना है और जिस दूकान में जो वस्तु चाहि
ये सो धरी है पर मनुष्य का नाम नहीं यह दसा देख हा-
तिम अचम्भे में हो मन में कहने लगा कि कोई व्याधि वा
दैत्य इस शहर में आया है जिस के डर से यहां के लोग
अपनी दुकानें छोड छोड भाग गये हैं यह बात मन में-
कहता हुआ आगे बढा और बादशाही किले तक जा प-
हुंचा उस में बादशाह अपने लडकों वालों संपदा समे
त रहता था और दो चार नौकर भी वाहिर के दरवाज़े
पर दरीचों में बैठे थे हातिम को देख एक बोला कि-
बहुत वरसों में एक मुसा फिर इस शहर में आया दू-
सरे ने कहा कि इसे पुकारो जो इधर आवै यह वात सुन
एक ने पुकारा हातिम एक दरीचे के नीचे खडा हो कही

बादशाह ने खिड़की से सिर निकाल के कहा कि अरे
मुसाफ़िर तू कहां से आया है और कहां जायगा हाति-
म बोला कि मैं यमन का रहने वाला शाहाबाद से आ
या हूं और कोह निदा के जाने का मनोर्थ है यह सुन के
बादशाह ने कहा कि तू राह भूल गया जो बांई ओर के
रस्ते से आया यहां तुझे तेरी मौत लाई है इसी समय
तू अपने प्राण खो के इस संसार से जा चुका हातिम
ने कहा कि जो परमेश्वर की इच्छा यही है तो मैं तन म
न से प्रसन्न हूं पर आप अपनी दशा कहिये कि देखने
में तो धनवान जान पड़ते हो फिर किला क्यों बंद हुआ
है सच कहिये कि आप कौन हैं उसने कहा कि मैं इस
शहर का बादशाह हूं और कुछ दिन से यहां एक बड़ी
व्याधि आती है इस कारण से क्या प्रजा क्या फ़ौज मुझे
छोड़ जिस की जहां बनी तहां चले गये और शहर उजा
ड़ और मैं निर्धन होगया पर इस में उनका कुछ अप-
राध भी नहीं क्योंकि सिंह भी उस का सामना नहीं कर
सकता और मैं अपनी लाज से विवश हो लड़के वालों
समेत किला बंद हो के बैठा हूं इतना बल नहीं कि उसे
मारौं इस्से परमेश्वर के भरोसे पर एकान्त अंगीकार-
किया हातिम ने कहा कि वह व्याधि कोई दैत्य है वा-
कोई बड़ा जीव पशु घाती है कि कोई उस का सामना नहीं
कर सकता बादशाह ने कहा कि उस का घर कोहक़ा
फ़ में है थोड़े दिनों से यहां आने लगा है उस के कारण से
सब देश उजाड़ होगया नित्य एक समय उस को यहां
आना और दो चार मनुष्य खा के चले जाना पर आज
तक उस का पैर किले में नहीं आया क्योंकि क़िले के चा
रों ओर बड़ा खंदक सदा पानी से भरा रहता है नहीं जा

नते कि वह क्या है यह सुन हातिम बोला कि आप आनंद
किजिये मैंने उस जंगल में उसे मार डाला परमेश्वर कर
ता धरता है कि मैं कोह निदा की राह भूल बांई ओर आ नि
कला फिर उस पशु का और अपना सब वृत्तांत बरणन
किया इस बात के सुनते ही बादशाह किले से उतर हाति
म को गले लगा भीतर ले जाके प्रतिष्ठा पूर्वक मसनंद प
र बिठाया और भांति भांति के खाने मंगवा के उस के आ
गे चुनवा दिये हातिम और बादशाह ने एक साथ खाना
खाया और पानी पिया फिर बादशाह ने कहा कि मुझे
कैसे विश्वास आवै कि वह व्याधि मारी गई तब हातिम ने
उस के दांत और दुम और कान तरकश से निकाल
दिखा दिये बादशाह देख के हातिम के पैरों पर गिर प
ड़ा और धन्य धन्य कहा फिर सब ओर लोगों को लिख
भेजा कि वह व्याधि नष्ट हो गई तुम बे धड़क आके अ
पने देश में बसो और आनंद से रहो फिर कुछ दिन बीते
हातिम ने बिदा मांगी और कहा कि एक मनुष्य ऐसा मे
रे साथ कर दो कि मुझे कोहनिदा का रस्ता बतला दे बा
दशाह बोले कि यह शहर अब परमेश्वर की कृपा से ब
स जायगा इसे अपना ही समझ कें जो यहां का रहना
अंगीकार करो तो मैं अपनी बेटी तुम्हारी सेवा के लि
ये देता हूं हातिम ने कहा कि जब तक मैं दुखी लोगों
के कामों से छुटकारा नहीं पाता संसार का सुख महा पा
तक समझता हूं बादशाह ने ये बातें सुन उस के साहस
और बीरता पर धन्य धन्य किया और एक मनुष्य साथ
दे बिदा किया वह मनुष्य थोड़ी दूर जाके कहने लगा
कि हातिम कोह निदा का यह रस्ता सीधा है अब इस
सड़क में बे धड़क चला जा हातिम उसे बिदा कर उधर

चला कुछ दिन में एक बस्ते हुए शहर में जा पहुंचा वहां
के लोग उसे हाकिम के पास ले गये उस ने उठ के उस-
का अविश्वास कर पूछा कि अरे बटोही तू यहां कहां से
आया है यहां सिकंदर बादशाह आया था अब तुझे देखा
है इस का कारण तू सच कह हातिम ने कहा कि मुझे
बरज़ख सौदागर की बेटी हुस्न बानू ने कोह निदा का-
ठीक ठीक समाचार लेने को भेजा है यहां तक पहुंचते
पहुंचते बड़े बड़े क्लेश पाये अब आप से इस बात की
आशा है कि जो आप उस का भेद जानते हो और बत
लादें तो बड़ी कृपा करें क्योंकि दुख का बदला सुख से हो
जाय शहर के रईस ने कहा कि कोह निदा का भेद ऐसा
नहीं है कि साधारण वरणन हो सके जो तू कुछ दिन
यहां रहेगा तो प्रगट हो जायगा हातिम ने कहा कि ब-
हुत अच्छा तब हाकिम ने एक अच्छे मकान में बहुत
सुथरा बिछौना बिछवा दिया हातिम उस में रहने ल-
गा और सांझ सबेरे दोनों समय सुंदर स्वच्छ स्वादिष्ट
गरम ठंढा भोजन जल भेजने लगा और आप भी बहु
धा हातिम के साथ उठता बैठता रहा एक दिन सौ दो सौ
मनुष्यों में हातिम उदासीन बैठा हुआ कुछ बातें कर
रहा था उस में कोह निदा की वार्त्ता भी आगई हातिम
ने उन लोगों से पूछा कि कोह निदा कौनसी है उन्हों ने
कहा कि यह कोह निदा है जिस के क़िले की दीवारें आ
काश से बातें कर रही हैं और उस से आपही आप ए-
क शब्द आता है ये बातें हो रहीं थी कि इतने में उस प
हाड़ की ओर से शब्द आया किया अरवीआ अरवी उ-
सी समय उस सभा में से एक सुंदर तरुण मनुष्य सह
सा दौड़ा लोगों ने उस के घर वालों से जा कहा कि उस

मनुष्य को कोहनिदा से बुलाया आया है वह चला इस बात के सुनते ही वे सब दौड़े आये तो देखा कि उस का मुह लाल हो रहा है लोग उसे घेरें हैं वह कोहनिदा की ओर चला जाता है यह वृत्तांत देख हातिम अचम्भे में हो पूछने लगा कि मित्रो इसे बैठे बैठाये क्या हुआ कि बावला सा दौड़ा जाता है न कुछ कहता है न सुनता है लोगों ने कहा कि उसे कोहनिदा से बुलावा आया है कि शीघ्र आ हातिम ने अपने मन में कहा कि मैं ने जाना कि किसी ने बुलाया है जो ऐसा उड़ा जाता है इस बात को सोच उसने पकड़ लिया और कहा कि अरे भाई य य उचित नहीं जो तू नहीं बतलाता है परमेश्वर के लिये कहि दे कि तुझे किसने बुलाया है जो हम सब को छोड़े चला जाता है हातिम ने अपना सा सिर पटका पर उसने कुछ न कहा और हाथ झटक के भागा और पहाड़ के नीचे जा पहुंचा हातिम भी उस के पीछे लपका चला गया सहसा वह पहाड़ हातिम की दृष्टि से लोप हो गया उसने अपना सा दृष्टि गड़ा के देखा तो रंगीन पत्थर ही देख पड़े और कुछ न सूझा तब अचंभे में हो सब लोगों के साथ शहर में फिर आया और सब लोग अपने घर गये पर कोई उस के लिये रोया नहीं बहुतसा खाना बांटा और आनंद मनाया फिर अपना काम करने लगे तब हातिम ने लोगों से पूछा कि तुम में किसी ने भी जाना कि उस पर क्या बीता वे बोले कि तूभी तो वहीं था जो तूने देखा वही हमने देखा फिर हम से क्यों पूछता है यह सुन हातिम चुप हो रहा और उस मनुष्य के लिये आंखों में आंसू भर पछताने लगा उन्हों ने कहा कि हमारे देश की रीति नहीं है कि कोई किसी के

लिये रोवै और दुख करै जो तू इस शहर में दो चार दिन
रहा चाहता है तौ हमारी चाल पर चल नहीं तो इस ब-
स्ती से निकाल दिया जायगा इस बात के सुनते ही-
हातिम आसूं पी गया मन में उस का सोच करने-
लगा उन्हों ने उसे उदास देख के कहा कि अब तू
क्यौं चिंता करता है कोह निदा का यही वृत्तांत है जो
तू ने देखा हातिम बोला कि मैं ने क्या देखा और कुछ
न जाना इसी चिंता में हूं कि हुस्नबानू से क्या कहूंगा।
निदान हातिम को यहां छः महीने बीत गये उतने दिनों
में पंद्रह मनुष्य उसी भांति उस पहाड़ की ओर गये
और फिर न फिरे उस शहर के रहने वालों में एक औ
र मनुष्य का हातिम नाम था उस्से हातिम की बड़ी
मित्रता थी और परसपर प्रीति बहुत बढ़ गई वे दोनों
रात दिन एक ही जगह रहते और भी बहुत से लोग
उन के साथी थे एक दिन कोह निदा के किले से शब्द
आया था अखीया अखी इस बात के सुनते ही वह
हातिम का मित्र उस पहाड़ की ओर चला उस के भाई
बंदों को समाचार मिला कि हातिम भी वहां बुलाया
गया सब इकट्ठे हो के आये और उसे घेर लिया तब-
हातिम अपने जी में कहने लगा कि यह भी वैसे ही च
ला जायगा बड़ा संताप है कि मेरी उस्से बड़ी प्रीति हो
गई थी अब यह भी जाता है मैं इसे कभी न छोडूंगा-
इस का साथ देना मुझे अवश्य है जो होनी हो सो हो क्यौं
कि यहां के लोगों से कोह निदा का यथार्थ वृत्तांत प्रगट
न हुआ यह बात मन में ठान कमर के फ़ैट बांधी और-
उसका हाथ पकड़ पहाड़ की ओर दौड़ा और अपना
सा कहता था कि भाई यह क्या दसा है और तुझे कौन

खींचे लिये जाता है वह कुछ न बोला फिर हातिम उकता के बोला कि अरे निर्दयी कैसी मित्रता थी हम तुम बहुत दिन एक साथ रहे अब एक बात से भी गये तेरा बोल क्यों बंद हो गया सच कह कि तुझे कौन घसीटता है और किधर जाता है उसने कुछ ध्यान न किया कि कौन है और क्या बकता है हातिम के हाथ से अपना हाथ छुडाने लगा इतना बल किया कि हाथ छुट गया और हातिम धरती पर गिर पड़ा तब वह परबत की ओर चला हातिम भी उठके उसके पीछे चला गया एक क्षण में दोनों पहाड़ के नीचे जा पहुंचे हातिम ने उछल के पीछे से उसे पकड़ लिया। उसने अपना सा चाहा कि उसे अलग करें पर न कर सका इसी भांति दोनों गिरते पड़ते पहाड़ के ऊपर जा पहुंचे ज्योंहीं क़िले के पास पहुंचे एक खिड़की दिखाई दीनी दोनों लपटे लपटाये उसके भीतर चले गये और लोगों की दृष्टि से लोप हुए सब लोग हातिम का सोच करते हुए शहर में आये हाकिम को समाचार पहुंचाये कि मुसाफिर भी हातिम के साथ पहाड़ पर चला गया इस बात के सुनते ही हाकिम क्रोध कर कहने लगा कि अरे मूर्खों आज तक कोई बिन बुलाये उस पहाड़ पर नहीं गया तुमने उसे क्यों छोड़ा और किसलिये जाने दिया उसका पाप तुम्हारे सिर पर है उन्हों ने बिनती कीनी कि प्रभु हमने उसे बहुतेरा समझाया कि तू वहां न जा उसने हमारा कहना न माना और कहा कि वह मेरा यार जानी है मैं उसे कभी न छोडूंगा जो आपदा उस पर पड़ेगी उसे मैं भी अपने सिर लूंगा ये बातें कर राजा प्रजा सबके सब हातिम के लिये कुढने लगे और वहां का वृत्तांत यह हुआ कि जब वे दोनों खिड़की से आगे बढे तो चुप चाप एक निशान एक लंबी चौड़ी

जगह में जा पहुंने वहां हरी हरी घास ऐसी जम रही थी
कि दृष्टि काम न करती थी मानो पन्ने का बिछौना चारों ओ
र बिछा है पर थोडीसी धरती सूनी पड़ी है वह मनुष्य उस-
पर पांव रखने लगा पैर रखते ही चित्त गिर पड़ा हातिम
ने चाहा कि हाथ पकड़ के उठावे इस में उसका मुंह पी
ला पड़गया आंखें पथरा गईं हाथ पैर कड़े हो गये उस
की यह दसा देख हातिम ने अपने मन में कहा कि यह
भर गया आंखों में आंसू भर आये और रोने लगा इ-
तने में धरती तड़क गई वह मनुष्य उस में समा गया फिर
वह जगह हरी हो गई यह वृत्तांत देख हातिम ने परमेश्वर
को मणान किया और कहा कि जगत ना समान है एक
दिन सब को मरना है अब कोह निदा का यथार्थ वृत्तांत जा
न पड़ा अब यहां से चलिये यह धुनि बांध के चल दिया
सब दिन चला पर उस खिड़की और क़िले का खोज़ न
मिला परमेश्वर जाने वह खिड़की क्या हुई और क़िला-
किधर गया सात दिन बिन अन्न जल मारा मारा फिरा
चलने से निराश हो मन में कहने लगा कि अरे हातिम
तेरी मौत तुझे यहां लाई है जो तू बिन बुलाये आया क्यों
कि अब वह क़िला और पहाड़ और शहर नहीं देख पड़-
ता इतने में एक नदी तीर जा पहुंचा क्या देखता है कि व
ह बड़ी प्रबलता से बहि रही है जिस का वारा पार नहीं
मिलता बड़ी चिंता कर मन में कहने लगा कि परमेश्वर
इसे कैसे पार उतरूं तेरे बिन कौन बेड़ा पार करैगा इ-
तने में एक नाव देख पड़ी कि इधर बही चली आती है हा
तिम ने जाना कि कोई मल्लाह लाया है जब किनारे पर-
लगी तो उस पर किसी को न देखा तब परमेश्वर को प्रण
म कर चढ़ लिया फिर देखा कि एक कपड़े में कुछ लिपटा-

रक्खा है भूखा तो था ही परंतु हाथ बढ़ाकर खोला तो दो रोटियां और मछली का कबाब गरमा गरम पाये चाहता था कि खावैं पर यह सोचा कि मल्लाह ने अपने लिये न रक्खा हो पराई बस्तु खाना भला नहीं इतने में एक मछली ने नदी से सिर निकाल के कहा कि अरे हातिम ये रोटियां और कबाब तेरा ही भोजन है सुख से खा कुछ चिंता मत कर यह कहि के पानी में डुब गई हातिम ने उसी समय उस को खा के पानी पीया परमेश्वर को प्रणाम किया इतने में आंधी की एक ऐसी झकोर आई कि तीन दिन में नाव किनारे लगी हातिम परमेश्वर की अस्तुति करता हुआ नाव पर से उतर मन में कहने लगा कि शहर की राह कहां है कि वहां जा के उस मनुष्य की दसा बरणन करूं सात दिन रात चलते बीत गये पर राह का खोज और अन्न जल न मिला कोई वृक्ष भी न देखा कि उस के पते से जाता घबराया हुआ चला जाता था कि एक पहाड़ बहुत ऊंचा देख पड़ा तब उसी ओर चला तीन दिन में उस के नीचे रुधिर बहता पाया सोचने लगा कि कोई यहां नहीं है जिस्से इसका वृत्तांत पूछूं निदान पहाड़ पर चढ़ने लगा बारह दिन में उस के ऊपर जा पहुंचा तो एक बड़ा मैदान दिखाई दिया कि वहां की मिट्टी और पशु पक्षी बीर बहोटी से लाल हो रहे हैं हातिम भूख प्यास भूलें छः कोस तक चला गया वहां क्या देखता है कि रुधिर की बहुत बडी नदी लहरें ले रही है उस में जितने जीव हैं मानों लोहू से बने हैं घबराया कि इस्से कैसे पार उतरूंगा यही बिचारते किनारे किनारे चल निकला कि कहीं तो उतरने की गौं मिलेगी जब भूख प्यास लगती तब शिकार करके खाता और मोहरा मुंह में रख लेता एक

महीना ऐसे ही बीत गया तब एक ऐसी जगह पहुंचा कि जहां धरती और वृक्ष पशु पक्षी नहीं केवल रुधिर की नदी है तब मन में कहने लगा कि मैंने एक महीना भर इतना क्लेश सहा कि पैर चलने से रह गये पर घाट न देख पड़ा जो दश बरस तक ऐसे ही फिरूंगा और रुधिर की नदी बिन कुछ और न देखूंगा क्योंकि परमेश्वर की रचना में बुद्धि बल नहीं चलता जिन वस्तुओं को उसने गुप्त किया है वे प्रगट नहीं हो सकतीं जो वही कृपा करे तो अपने मन बांछित स्थान को पहुंचों मुझ से कुछ उपाय नहीं हो सकता बड़ा संताप है कि मुनीर शामी मेरी राह तकता होगा और मैं यहां व्याधि के भंवर में फंसा हूं इस्से यह कठिन चिन्ता है कि कोहनिदा के समाचार बरज़ख सौदागर की बेटी हुस्न बानू को कैसे मिलें जो वह उस के समाचार लाने के लिये लोगों को भेज के दुख के बन में डालती है निश्चय है कि बहुतेरे उस के समाचार लेने को आये होंगे पर निराश फिरि फिरि गये होंगे इतने में यह सोचा कि मैंने अपने सुख के लिये यह काम नहीं किया पराये लिये यहां तक आया हूं परमेश्वर की कृपा का भरोसा रखना चाहिये वह इस्से भी उद्धार करेगा और मेरा मनो-र्थ सफ़ल होगा इसी सोच विचार में था कि एक वस्तु नदी में देख पड़ी हातिम उस की ओर देखने लगा कि यह कोई जीव या लकड़ा बहा चला आता है जब बहुत समीप आई तब देखा कि नाव है परमेश्वर को प्रणाम कर चढ़ लिया फिर वैसे ही रोटियां और कबाब पाये बिन सोच विचार खा के परमेश्वर की अस्तुति कीनी जब नाव मांझ धार के पास पहुंची तो ऐसी प्रबल पवन

चलने लगी और बड़ी बड़ी लहरैं उठीं हातिम डर कै परमेश्वर
का स्मरण करने लगा और आंखैं बंद कर नाव में लिपट
गया इतने में वह नाव मांझ धार में आ गई तब उस की ल
हरैं अग्नि समान ऐसी ऊंची उठीं कि आकाश तक जाने-
लगीं यह और भी घबराया मारे डर के जी डूबने लगा औ
र प्राण पर आ गई सात दिन ऐसे ही बीते आठवें दिन ना
व किनारे आ लगी हातिम उतर पड़ा नाव फिर उलटी फि
र गई यह किनारे किनारे चलने लगा और मन में यह
कहता था कि यह भेद कुछ न खुला कि यह नाव कौन
लाया और कबाब रोटी कौन धर गया सात दिन तक-
इसी सोच बिचार में उठतें बैठतें चला गया इतने में दू
र से एक उजली वस्तु नदी की लहरौं समान देख पड़ी
हातिम भुचक रह गया आगे बढ़ के देखा कि एक
स्वच्छ जल की नदी लहरें ले रही है और ऐसी चम-
कती है कि मानों किसी ने चांदी गला के बहा दी है हा-
तिम मारे प्यास के किनारे पर आ बैठा और उस में
बायां हाथ डाला जब निकाला पानी तो न पाया पर हाथ
चांदी का हो गया उसे अपना सा दाहिने हाथ से पोंछा-
पर वह वैसा ही रहा और बोझ बढ़ गया हातिम ने मन में
कहा कि यह अद्भुत नदी है जो इस में स्नान करैं तो स-
ब चांदी का हो जाऊं पर मारे बोझ के चलना कठिन होगा
निदान सिर नीचा कर बैठ गया घबराहट में कभी दाहिनी
कभी बांईं ओर देखता और कभी सिर नीचा कर लेता इ
तने में एक नाव उस किनारे से आ पहुंची इसे भेंट हुआ
परमेश्वर का नाम ले चढ़ बैठा उस में एक हलवा का था-
ल स्वच्छ पवित्र गरम गरम देख पड़ा उस ने अपनी ओ
र खींच सुख से खा के पैर फैला आनंद से सो रहा कई दि-

न में नाव किनारे पर आ पहुंची हातिम उतर के आगे बढ़ा प
र अपना हाथ देखा करता चार दिन में एक पहाड़ देख पड़ा
उसने जाना कि थोड़ी दूर है पर वह एक महीने की राह प
र था हातिम शिकार करता मेवे खाता चला जाता था ज
व तीन दिन की राह पर गया तब ऊजले पीले लाल हरे
कंकर बहुत सुरंग देख पड़ने लगे जब उससे आगे बढ़ा तो
हीरा पन्ना माणिक जगह जगह पड़े थे उस समय लाल
च ने घेरा तो कितने एक रत्न अच्छी अच्छी भांति के उठा
के जेब में रख लिये और आगे चला थोड़ी दूर चल कर
देखा कि उससे भी बहुत अच्छे रत्न यहां पड़े हैं उन्हें फैंक
उन को जेब में भर लिया और मन में कहा कि जो यह
रत्न शहरों में पहुंचें तो इन के दाम कौन दे सकैगा इसी
विचार में चला गया निदान उस के बोझ से थक के किसी
जगह बैठ गया कई पन्ना हीरा माणिक जो सब से अच्छे
थे वो चुन लिये और फैंक दिये फिर वहां से चलके एक-
तालाब पर पहुंचा उस के किनारे बैठ के हाथ पैर धोये इ
तने में बायां हाथ जो देखा तो उसे जैसा पहिले था वैसा
ही पाया पर नख चांदी के रह गये परमेश्वर का धन्यवाद
कर कहने लगा कि परमेश्वर उस नदी में तो हाथ चांदी
का हो गया और इस तालाब में फिर वैसा ही हो गया इ
स में क्या भेद है इतने में रात हो गई उसी जगह पड़ रहा
उस तालाब से दो मनुष्य निकले उन के सिर मनुष्य के
समान और धड़ जैसे हाथी के और नख बाघ के से और
रंग के बहुत काले थे हातिम डर के उठ खड़ा हुआ कि य
ह क्या व्याधि है जो भागों तो लाज आती है जो ठहरों तो
ठहर नहीं सकता इसलिये भाग्य में क्या है सहसा तीर क
मान उठा के एक तीर मारा एक ने उसे पकड़ लिया चाह

ता था कि दूसरा तीर मारैं कि उन्हों ने पुकारा कि अरे हाति
म तू अपने प्राण भय से हमें मारता है हम भी परमेश्वर के
जीव हैं तुझे दुख देने नहीं आते उसने तीर कमान हाथ से
डाल दिया और शिर झुका के बैठ गया फिर मन में सोचा
कि इन को मुझ से क्या काम है जो इधर चले आते हैं तीर
तो उन्हों ने बीच ही में पकड़ लिया जो दूसरा मारूंगा तो
काम न करैगा इतने में वे समीप आके कहने लगे कि
हातिम तुझे लाज नहीं आई कि रत्नों का लालच किया
हातिम बोला कि मैंने लालच करके किस का रत्न ले-
लिया उन्हों ने कहा कि तू उस जंगल से रत्न लाया है तेरे
पास अभी तक हैं यह सुन हातिम बोला कि अरे मित्रो
यह परमेश्वर का देश बड़ा लंबा चौड़ा है जो मैंने यहां से
उठा लिया तो किसी का क्या कुछ तुम्हारा तो नहीं वे बोले
कि परमेश्वर ने यह और सृष्टि के लिये रक्खा है हातिम
ने कहा कि वह कौन सी सृष्टि है जो मनुष्य से उत्तम है
सब से तो उत्तम मनुष्य ही है वे बोले कि यह सच है प
र ये रत्न परमेश्वर ने परियों के लिये बनाये हैं कि वह अ
पने काम में लावें हातिम ने कहा कि इन रत्नों के योग्य क्या
मनुष्य नहीं हैं जो पहिनें और अपने काम में लावें मैंने
तो लोगों के दिखाने के लिये उठा लिया है कि परमेश्वर ने
क्या क्या वस्तु किस किस आधिक्य से जंगलों में उत्पन्न
की हैं वे देखैं और परमेश्वर के चरित्र में कोई संका न करैं
वे बोले कि यह सच है कि तूने लालच से नहीं उठाया पर जो
तू कुशल क्षेम से अपने शहर को जाया चाहता है तो इ
न रत्नों से हाथ उठा यह सुनते ही हातिम ने वे सब फेंक दि
ये और कहा कि तुम्हीं ले जाओ पर यह सोच है कि मैं-
बड़ी दूर से उठा लाया था और उन के लिये बड़े बड़े परिश्रम

किये बड़ा अन्याय है कि उसे मुझ से ले लिया में कुछ चुरा के नहीं लाया था यह क्या चलन है कि किसी के परिश्रम को वृथा किजिये वे बोले कि जो तू इन के उठाने की मजूरी चाहता है तो भी ठीक नहीं क्योंकि किसी के बे कहे इतनी वस्तु उठा लेना और अपने पास रखना कब उचित है और परिश्रम के बदले दंड देना पड़ता है ये बातें सुन हातिम सिर झुका के चुप हो रहा वे एक माणिक एक हीरा एक पन्ना जो सब से बहुत अच्छे थे सो हातिम को देने लगे और बोले कि तुझ को यही बहुत है सो उसने ले लिये और कहा कि परमेश्वर के लिये मुझे राह बता दो जो मैं किसी भांति अपने देश को पहुंचों वे बोले कि यही बड़ी बात समझ जो तू कुशल क्षेम से आया और जीता जागता चला क्योंकि आज तक कोई यहां से जीता नहीं गया अब इतनी चिंता न कर तेरी आयुर्दाय बड़ी है इस के आगे एक रत्नों की और फिर अग्नि की नदी मिलेगी जो उन से कुशल पूर्वक उतर गया तो निस्सन्देह अपने देश में पहुंचेगा पर किसी वस्तु का लालच मत करना इसी में तेरा भला है जो किसी वस्तु पर मन दौड़ावेगा तो अपना किया पावेगा यह कहि के वे पानी में उतर पड़े और उस की दृष्टि से छिप गये हातिम सारी रात उसी जगह बैठा रहा और परमेश्वर का नाम रटा किया प्रातःकाल वहां से उठ के आगे बढ़ा थोड़ी दूर गया था कि एक नदी दिखाई दी कि उस का पानी सो नेका सा था उस्से भली भांति उतर गया कुछ दिन में और एक नदी देख पड़ी हातिम उसे देख बहुत प्रसन्न हुआ इसलिये कि प्यासा बहुत था जब उस के पास पहुंचा तब उस के किनारे हजारों मोती कंकर से पड़े देखे जो एक एक अंडे के समान थे उन की चमक से आंखें रूपकी आती थी और हीरों

का तो क्या ठिकाना था हातिम लालच में आके चाहता था कि
दस बीस उठालें इतने में उन देवों की शिक्षा का स्मरण आ
या डर के रह गया उस के किनारे बैठा तो देखा कि उस का
पानी दूध और शहत सा है प्यासा तो था ही जी भर के पिया-
उस से भी अच्छे सुख से उतर आगे बढा तो दूर से एक ऐसा
प्रकाश देख पडा मानो सोने का तखता पवन में चमक रहा
है उस की ओर चला एक महीने में उस के पास जा पहुंचा
देखा कि एक सोने का पहाड आकाश से लगा चमक रहा
है यह उस पर चढ गया वहां एक एक सोने का वृक्ष फूला
फला देख कै अचम्भे में हो गया तीन दिन उस पर चला ग
या फिर एक बडा मैदान देखा जिस की सब धरती सुनहरी
थी उस से आगे बढ एक सोने का महल बहुत रमणीक औ
र सुघर देखा जब पास पहुंचा तो दरवाज़ा खुला पाया
भीतर गया तो वहां एक बाग़ परम मनोहर फूलों फलों से
हरा भरा देखा उस में सोने के हज़ारों वृक्ष चमक रहे थे उ
न के जडाऊ पत्ते दमकते थे हातिम देख कें अचम्भे में हु-
आ और परमेश्वर की रचना को देख धन्य धन्य करने लगा
फिर थोडा सा मेवा तोड के खाया इतने में एक तालाब देख
पडा उस का पानी निर्मल और स्वच्छ बिल्लौर सा था उस
के किनारे जा बैठा और मन में सोचने लगा कि यह बाग़
किस का है और इस का मालिक कौन है किस्से पूछिये
इतने में कई परियां अच्छी पोशाक और जडाऊ गहने से
सजी हुई आनिकलीं हातिम को देखते ही मुसक्या के चौंक
न्नी सी हो रहीं कि कहां यह जगह और कहां यह मनुष्य हा
तिम भी उन्हें देख मन में कहने लगा कि परमेश्वर क्या सुं
दर रूप है जो तू ने इन को दिया है वही मलिका ज़री पोश
का स्मरण आया कि वह भी ऐसी ही सुंदर है परमेश्वर उस से

शीघ्र मिलावे और उस का मुह दिख लावे फिर उन से पू
छा कि तुम कौन हो और यहां का बादशाह कौन है वे
बोली कि यह महल नौशलब परी का है इतने में वह आई-
पहुंची हातिम उसे देखते ही मूर्छित हो के गिर पड़ा वह उ
स के सरहाने आके खड़ी हो बोली कि अरी कोई है शीघ्र
आके इस के मुह पर गुलाब छिड़ कै वहीं एक सुकुमारी-
दौड़ी गई और जड़ाऊ गुलाब पाश लाके हातिम के मुह
पर गुलाब छिडकने लगी जब हातिम को चेत हुआ
तब नौशलब एक जड़ाऊ तख़्त पर जा बैठी और हातिम
को जड़ाऊ कुरसी पर बिठा पूछने लगी कि अरे सुंदर त
रुण सच कह कि कहां से किस काम के अर्थ के-
लिये यहां आया है और अब किधर जायगा हातिम ने
अपना सब वृत्तांत ओर से छोर तक वर्णन करके पूछा
कि इस मकान का मालिक कौन है और इस पहाड़ का
क्या नाम है वह बोली कि इस पहाड़ को कोह जेरी कहते
हैं और शाह पाल बादशाह का मकान है उसकी एक बेटी
आसा नामी है मैं भी उस लड़की की एक सहेली हूं आज
सात वां दिन मेरी बारी का है इस्से उस की सेवा के लिये
आई हूं और यह मकान कोह काफ़ से संबंध रखता है
और पृथ्वी ही की सीमा में है जो दूर से दिखाई देता है उ
सी का किला है हातिम को चार दिन तक वहां रख के भां
ति भांति के खाने और मेवे खिलाये और बड़ा आदर स-
म्मान किया पांचवें दिन कहा कि आप के रहने योग्य
यह जगह नहीं है इसी में भला है कि अब आप यहां से
जावें हातिम उस्से बिदा हो पहाड़ की ओर चला इस बी
स दिन बीते पहाड से उतर एक जंगल में आ पहुंचा वहां
सोने की नदी दिखाई दी कि उस का पानी गला हुआ।

सोने का सा लहरें ले रहा है और उस की लहरें आकाश से टक्करें लेती हैं यह सोच कें समुद्र में डूबा हुआ उस के तीर बैठ रहा कि इस्से कैसे पार हूजिये इतने में एक सोने की नाव देख पड़ी और झट किनारे पर आ पहुंची हातिम परमेश्वर का धन्य वाद कर उस पर बैठ गया इतने में गरम गरम हलवे से भरा एक थाल देख पड़ा भूखा तो था ही बड़ी रुचि से खाया चाहता था कि नदी में हाथ डाल कें पानी से मुंह लगावे पर डरा कि यहां हाथ सोने का न हो जाय हाथ खींच एक कटोरा पानी से भरा प्यास बहुत लग रही थी थोड़ा सा पानी मुंह में टपकाया देखा तो कटोरा समेत चार दांत सोने के हो गये निदान चालीस दिन में नाव किनारे पर पहुंची हातिम नाव पर से उतर परमेश्वर का धन्य वाद कर आगे बढ़ा सात दिन में ऐसे अचरज देखे कि इतने दिनों कभी देखे सुने न थे आठवें दिन पत्थरों के जंगल में जा पहुंचा वहां के कंकर पत्थर ऐसे गरम थे मानों अभी आग से निकाले हैं बड़ी कठिनता से कुछ दूर चला जब चल न सका हार मान बैठ गया गरमी के मारे होंठ सूख गये और सारा बदन जल उठा तब तो घबरा के मोहरा मुंह में रख लिया पर कुछ गुण न देखा तब मुंह से निकाल फेंक दिया और आप धरती पर गिर व्याकुल हो तड़फने लगा ऐसा अचेत हुआ कि मुंह खुल गया जीभ बाहर निकल पड़ी इतने में वे दोनों देव जो रत्न ले गये थे निकल आये और हातिम को मीठा ठंढा पानी पिलाया जब हातिम को चेत हुआ तो आंखें खोल के देखा तो वेई दोनों हैं तब बोला कि अरे मित्रो तुम्हें धन्य है जो समय पर आ पहुंचे और बड़ी दया की अब कहो किधर जाऊं यह गरमी किस कारण से है वे बोले कि

यह अग्नि की नदी है उसी केकारणसे यह गरमी है पर-
रस्ता यही है चलाजा परमेश्वर की इच्छा से अपने देश
में पहुंच रहैगा राह बतलाना हमारा काम नहीं पर इ-
तना होसकता है कि आग धीमी हो जाय उसने कहा
कि जो तुम से होसकै सो करो यह उपकार वृथा नहीं
है तब उन्होंने एक मोहरा हातिम को देके कहा कि आ
गे अग्नि की नदी है जो इसे मुहमें रखलेगा तो तुझपर
आग काम न करैगी ठंढा चला जायगा पर सुरत रहै-
कि नदी के पार होतेही यह मोहरा फैंक देना यह कहि
लोप होगये वह रात हातिम वहीं रहा प्रातःकाल वह
मोहरा मुह में रख आगे चला तीन दिन बीते सामने
अग्नि की ज्वाला दीख पड़ने लगी हातिम डरा फिरई
श्वर का नाम ले आगे बढा जब किनारे पर पहुंचा तो
देखा की आग की लहरैं आकाश तक जाती हैं हाति-
म घबराके कभी आकाश कभी धरती को देखता इत
ने में एक नाव किनारे आलगी मन में परमेश्वर की अ
स्तुति कर कहने लगा कि देख भाल आप को अग्नि में
डालना है पर क्या करूं कि राह यही है परमेश्वर सुगम
करैगा जो इस की इच्छा यही है तो संतोष करना चाहि
ये परमेश्वर का भरोसा कर नाव पर चढ बैठा और मोह
रा मुह में रख लिया इतने में एकरकाब कवाब रोटी से
भरा हुआ देखा सहसा उसे खींच लिया औरपेट भर
खाया नाव चली जाती हातिम जो आंखें खोलता तो ड
र के मारे प्राण निकलने लगते वहीं बंद कर लेता जब
नाव मंझ धार में पहुंची और चक्रीसी फिरने लगी त
ब हातिम ने जाना कि अब डूबती है आंखों से पट्टी बांध
सिर झुका परमेश्वर का स्मरण करने लगा यह समझा कि

अब जीता नहीं बचता परमेश्वर की कृपा से नाव किना
रे जा लगी हातिम ने नाव से उतर औरवैं खोल कर दे
खा तो न वह नदी है न आग है एक सुहावनासा जंगल
देख पडा मोहरा मुंह से निकाल फैंक दिया और आगे
चला थोडी दूर गया था तो जान पडा कि यह यमन का
देश है प्रसन्न हो परमेश्वर का धन्यवाद कर किसी गांव
की और गया एक खेत पर खडा ही के किसान से पूछा
कि यह देश कौन सा राज्य का है वह कुछ न बोला और
टक टकी बांध के उस का मुह देखने लगा हातिम बो-
ला कि क्या तू बहरा है जो नहीं सुनता वह बोला कि में
तुझे अपने बादशाहजादे हातिम के आकार देखता हूं
हातिम ने यह सुन के कहा कि तू कौन है और क्या जान
ता है वह बोला कि यह यमन का राज्य है और हातिम
हमारा शाहज़ादा है उस का बापते नामें यहां का बाद-
शाह है सात बर्ष हुए कि शाहजादा यहां से निकलगया
एक बेर उस के समाचार मालिका जरीपोश से मिले थे
उस से सब को थोडा सा धीर्य हुआ था अब तो उस के
मा बाप और भाई बंदों की बहुत बुरी दसा है कि सबको
अपना जीना भारी है और मालिका जरी पोश के तो प्रा-
णमर आवनी है देखिये उस के मिलने तक जीती है
वा नहीं हातिम ने कहा कि कुछ दिन हुए कि तुम्हारा शा-
हजादा मुझे राह में मिला था वह कुशल छेम से है तू
यमन में जाके सब छोटे बडे को उस की ओर से दुआ
सलाम कहि देना और यह कहना कि हातिम शाहाबा-
द की ओर गया फ़िर कहा कि अरे किसान में बहुत प्या
सा हूं थोडा पानी पिला वह झट पट एक कटोरा दूध-
और एक छाछ का लाया हातिम ने बडे स्वाद से पीके मन

में कहा कि धन्य है परमेश्वर कि बहुत दिनों में मैंने आप
ने देश को देखा और यह न्यामत खाई फिर उठ खडा
हुआ और शाहाबाद का रस्ता लिया थोडे दिनों में वहां
जा पहुंचा लोग दौडे और हुस्न बानू को उस के आने
के समाचार पहुंचाये उस ने परदा करके हातिम को
भीतर बुला लिया और सोने की कुरसी पर बिठा के क
हा कि धन्य है तुझे भला हुआ जो तू आया अब कोहनि
दा के समाचार कह और वहां का मुझे भेद बता हाति
म ने आदि से अंत तक सब वृत्तांत कह सुनाया हुस्न-
बानू ने कहा कि सच कहता है पर कुछ चिन्ह दिखा जि
स में निश्चय हो जाय हातिम ने हाथ दिखाया कि यह-
सब चांदी का होगया था फिर एक मीठे पानी के ताल
व पर पहुंचा और इसे धोया तो यह जैसा था वैसाही
होगया पर नख अब तक चांदी के बने हैं दूसरा चिन्ह
यह है कि सोने की नदी के पानी से चार दांत सोने के
हो गये और वे तीनों रत्न दिखा दिये तब हुस्नबानू-
ने बहुत भाव भक्ति की और स्वच्छ पवित्र स्वादिष्ट खा
ना मंगवा के सामने रख वाया हातिम ने कहा कि इसे
मेरे साथ कर देना चाहिये कि मैं क़ारवां सराय में जा
के मुनीरशामी के साथ खाऊंगा फिर वहां से उठ के स
राय में आया और मुनीरशामी से मिल के बडे स्वाद
से खाना खाया और अपनी बीती वार्त्ता विस्तार से क
ही मुनीरशामी ने उस के साहस बीरता की श्लाघा क
के बहुत सी आधीनता की हातिम ने दो तीन दिन आ
राम करके न्हाइ के नये कपडे पहिन हुस्न बानू के पास
गया हारपालों ने जा कहा उसने वैसे ही परदा करके
बुला लिया और जडाऊ कुरसी पर बिठाया हातिम ने

पूछा कि छटी बात कौन सी है उसे भी कहो कि पूरा करूं यह बात सुन हुस्नबानू बोली कि एक मोती मेरे पास है वैसा दूसरा ढूंढ लादे हातिम बोला कि मैं उसे देख लूं उस ने मंगवा कर दिखा दिया फिर कहा कि सच कह यह मुरग़ा वी के अंडे समान है कि नहीं हातिम ने कहा कि मैं जानता हूं कि तू तो मुझे नदेगी पर नमूना दे कि मैं वैसा ढूंढ लाऊं उसने वैसाही चांदी का मोती बन वाके उसे दिया हातिम उसे लेकें महिमा सराय में आया और मुनीरशामी को दिखा के कहने लगा कि हुस्नबानू इतना बड़ा मोती मांगती है मैंने तो अपने जीते इतना बड़ा मोती देखा सुना भी नहीं परमेश्वर जाने कि समुद्र में कौन सी जगह उपजता है मुनीरशामी ने कहा कि भाई जहां ऐसा मोती उपजता है पहिले वह जगह निश्चय करलो तब जाओ हातिम बोला कि पूछना कुछ अवश्य नहीं है मेरा परमेश्वर मुझे वहां पहुंचावैगा जिसने इतनी कठिन बातें सुगम कीनी हैं वह यह भी सुगम करैगा निश्चय है कि मैं वहां पहुंचौंगा और मोती ले आउंगा मैं परमेश्वर का भरोसा किये हूं और किसी की आशा नहीं करता इस बात पर मुनीरशामीने बडी श्लाघा की और कहा कि अभी कुछ दिन आराम करो हातिम बोला कि भाई यह काम हमी को करना है फ़िर विलम्ब करना क्या निदान हातिम मुनीरशामी से बिदा होइ वैसे मोती के खोज में चला ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥ + ॥

छठी कहानी में मुरग़ावी के अंडे समान मोती लाने का बरणन है॥